सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHI/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 90, नई दिल्ली । मंगलवार, 11 जून 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

भले ही आप इस दुनिया में अकेले आए हो परंतु जाने के बाद दुनिया में अपने विचार और बुद्धि तो देकर जा सकते हैं।

03 सफदरजंग अस्पताल में पहली बार हुई पांच रोबोटिक सर्जरी
06 नई सरकार से मजबूत होगी आर्थिकी
08 मुख्यमंत्री कोन बनेगा : धर्मेंद्र आउट, सुरेश पुजारी इन

जल्द शुरू होगा सरिता विहार फ्लाईओवर की मरम्मत का काम
बदरपुर और फरीदाबाद आने-जाने वालों की बढ़ेगी परेशानी

संजय बाटला

सरिता विहार फ्लाईओवर की मरम्मत का काम 15 जून से शुरू हो जाएगा। इससे बदरपुर व फरीदाबाद आने-जाने वाले लोगों को दो महीने तक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। यातायात पुलिस ने लोगों को असुविधा से बचाने के लिए एडवाइजरी जारी कर दी है। इसके तहत काम के दौरान रोड को पूरी तरह बंद नहीं किया जाएगा।

दक्षिणी दिल्ली। सरिता विहार फ्लाईओवर की मरम्मत का काम 15 जून से शुरू हो जाएगा। इसको लेकर यातायात पुलिस ने पीडब्ल्यूडी को एनओसी जारी कर दी है। यहां काम शुरू होने से बदरपुर व फरीदाबाद आने-जाने वाले लोगों की परेशानी बढ़ेगी।

इसके अलावा कई अन्य मार्गों पर भी यातायात बाधित होगा। हालांकि इस रास्ते को पूरी तरह बंद नहीं किया जाएगा। यहां से गुजरने वाले लोगों को ज्यादा दिक्कत न हो इसके लिए यातायात पुलिस को 24 घंटे शिफ्ट के हिसाब से तैनात किया जाएगा।

एक फेज में 15 दिन होंगे

यातायात पुलिस के अनुसार मरम्मत का काम दो महीने में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। यह काम चार फेज में होगा। एक फेज में 15 दिन होंगे। इसके तहत सबसे पहले 30 दिनों तक आश्रम से बदरपुर जाने वाले फ्लाईओवर की मरम्मत का काम किया जाएगा।

इसके बाद तीसरे और चौथे फेज का काम बदरपुर से आश्रम की तरफ आने वाले फ्लाईओवर पर किया जाएगा। बता दें कि लोकसभा चुनाव के चलते मरम्मत का काम शुरू नहीं हो सका था।

इन वैकल्पिक रास्तों का इस्तेमाल करें: यातायात पुलिस

यातायात पुलिस ने लोगों को असुविधा से बचाने के लिए एडवाइजरी जारी कर दी है। इसके तहत काम के दौरान रोड को पूरी तरह बंद नहीं किया जाएगा।

पुलिस के अनुसार बदरपुर की तरफ जाने वाले लोगों को सरिता विहार से स्लिप रोड से होते हुए रोड संख्या 13ए से जाना होगा। यहां से वह यू टर्न लेकर मथुरा रोड के रास्ते जा सकेंगे।

इसके अलावा जिन लोगों को नोएडा जाना है, वह विकल्प के तौर पर डीएनडी के रास्ते का प्रयोग कर सकते हैं। इसी तरह बदरपुर से आश्रम आने वाले लोगों को सरिता विहार स्लिप रोड से ओखला एस्टेट मार्ग, क्राउन प्लाजा मार्ग से होते हुए जाना होगा। वह बदरपुर से महरौली-बदरपुर रोड का इस्तेमाल कर आश्रम जा सकेंगे।

वहीं, सरिता विहार अंडरपास में भी मरम्मत का काम चल रहा है। इसके तहत लाइटें बदली जा रही है। इसका काम लगभग पूरा हो चुका है। क्राउन प्लाजा से कालिंदी कुंज मार्ग पर अंडरपास के नीचे टूटी हुई सड़कों को बनाने काम भी शुरू किया जाएगा।

काशी को एक और वंदे भारत की सौगात हावड़ा के लिए चलेगी 8 कोच की ट्रेन...

परिवहन विशेष न्यूज

काशीवासियों के लिए खुशखबरी है। यहां एक और वंदे भारत की सौगात मिलने वाली है। काशी से हावड़ा का सफर आसान करने के लिए 8 कोच की मिनी वंदे भारत चलाने की योजना है।

वाराणसी। काशी को एक और वंदे भारत की सौगात मिलेगी। जल्द ही पूर्वोत्तर रेलवे वाराणसी मंडल से हावड़ा के बीच मिनी वंदे भारत एक्सप्रेस चलाई जाएगी। चेन्नई स्थित आईसीएफ से 15 वंदे भारत की रैक निकली है। इसमें आठ कोच की चेयरकार और स्लीपर वंदे भारत शामिल है। 130 से 160 किमी की रफ्तार से चलने वाली वंदे भारत महज छह घंटे में अपना सफर तय करेगी।

रेल अधिकारियों के अनुसार, बनारस-हावड़ा वंदे भारत का प्रस्ताव 2023 में ही रेलवे बोर्ड को भेजा गया था। अब पूर्वोत्तर रेलवे प्रशासन को मिनी वंदे भारत एक्सप्रेस मिलने की उम्मीद है। अफसरों का कहना है कि एनडीए सरकार के गठन के साथ ही रेल परिवहन को रफ्तार मिलेगी। यात्रियों के लिए नई सुविधाएं विकसित की जाएंगी।

पांचवीं वंदे भारत की मिलेगी सौगात

वाराणसी से पटना और रांची के बीच पहले से वंदे भारत चल रही है। अब हावड़ा तक संचालन की तैयारी है। इसके लिए रूट का सर्वे हो चुका है। इसकी फाइनल रिपोर्ट रेल मंत्रालय को सौंप दी गई है। इसी बीच लोकसभा चुनाव का एलान हो गया। इस कारण प्रक्रिया ठप हो गई। अब चुनाव खत्म हो चुका। सरकार का गठन भी हो गया। लिहाजा, आठ कोच की मिनी वंदे भारत एक्सप्रेस चलाने की तैयारी की जा रही है।

वाराणसी से नई दिल्ली के लिए दो वंदे भारत एक्सप्रेस, वाराणसी से पटना और वाराणसी से रांची के बीच एक-एक वंदे भारत एक्सप्रेस का संचालन किया जा रहा है। बनारस-हावड़ा मिनी वंदे भारत इस तरह की पांचवीं ट्रेन होगी। अभी जितनी भी वंदे भारत चल रही हैं वे कैंट स्टेशन से ही हैं। हावड़ा वंदे भारत को बनारस स्टेशन से चलाया जाएगा। रेल अधिकारियों के अनुसार ट्रेन संचालन की घोषणा रेलवे बोर्ड की ओर से होगी।

दिल्ली में इन वाहनों का धड़ाधड़ कट रहा चालान, आप ना करें ऐसी गलती

दोषपूर्ण नंबर प्लेट वाले वाहनों के खिलाफ तेज हुई कार्रवाई न केवल अभियोजन में वृद्धि की व्यापकता को दर्शाता है बल्कि सड़क सुरक्षा बढ़ाने और यातायात नियमों का अनुपालन लागू करने का भी यह प्रयास माना जाता है। चालू वर्ष में एक जनवरी से 31 मई तक पांच माह में ट्रैफिक पुलिस ने दोषपूर्ण नंबर प्लेट वाले 16859 वाहनों के चालान काटे हैं।

- चालू वर्ष में एक जनवरी से 31 मई तक यानी पांच माह में 16,859 वाहनों के काटे गए चालान
- बीते वर्ष इसी पांच माह के दौरान 4363 वाहनों के काटे गए थे चालान
- दोषपूर्ण नंबर प्लेट वाले वाहनों के चालान में 286 प्रतिशत की

नई दिल्ली। एनसीआर में रहने वाले लोग अगर अपने वाहनों से दिल्ली आते हैं तो वे यातायात नियमों का पालन करने में सतर्कता जरूर बरतें। राजधानी में यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों की खैर नहीं होती है।

दिल्ली यातायात पुलिस ने राजधानी में सुगम यातायात व्यवस्था के लिए हर वो तरीका अपना रहे हैं ताकि कार्रवाई के डर से लोग सावधानी पूर्वक यातायात नियमों का पालन करें। दोषपूर्ण नंबर प्लेट वाले वाहनों के खिलाफ तेज हुई कार्रवाई न केवल अभियोजन में वृद्धि की व्यापकता को दर्शाता है बल्कि सड़क सुरक्षा बढ़ाने और यातायात नियमों का अनुपालन लागू करने का भी यह प्रयास माना जाता है।

दोषपूर्ण नंबर प्लेट यानी अस्पष्ट नंबर, अनुचित रूप से लिखा हुआ नंबर या निर्धारित मानकों के अनुरूप न होने की श्रेणी में आता है। इसे यातायात नियमों का उल्लंघन और सुरक्षा में योगदान न देने वाले प्रमुख कारणों में माना जाता है।

इस तरह की कार्रवाई के लिए दिल्ली यातायात पुलिस ने अतिरिक्त कर्मियों को तैनात किया है ताकि उल्लंघन कर्ताओं पर निगरानी रखने और उन्हें पकड़ने के लिए आसानी हो। यातायात का अत्यधिक दबाव वाले क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देने के साथ पूरे शहर में प्रवेश व निकास द्वारों पर इसके लिए विशेष बंदोबस्त किए गए हैं।

पांच में दोषपूर्ण नंबर प्लेट वाले 4,363 वाहनों के काटे चालान

चालू वर्ष में एक जनवरी से 31 मई तक पांच माह में ट्रैफिक पुलिस ने दोषपूर्ण नंबर प्लेट वाले 16,859 वाहनों के चालान काटे जो बीते वर्ष की तुलना में 286 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि है। बीते वर्ष इस पांच माह की अवधि के दौरान दोषपूर्ण नंबर प्लेट वाले 4,363 वाहनों के चालान काटे गए। इसके अतिरिक्त दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने इसका गहन विश्लेषण किया है कि दोषपूर्ण चालानों की सबसे अधिक संख्या किन दस शीर्ष ट्रैफिक सर्कल में अधिक हैं। इन क्षेत्रों को चिन्हित कर प्रवर्तन पर फोकस किया गया। यातायात नियमों का जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन के अलावा ठोस प्रयास किया गया है।

उचित नंबर प्लेटों के महत्व के बारे में जन जागरूकता बढ़ाने की कोशिश की जा रही है। सोशल मीडिया और ऑटोमोबाइल एसोसिएशन के इसके लिए सहयोग लिया जा रहा है। वाहन मालिकों से आग्रह किया जाता है कि वे अनुपालन के लिए अपनी नंबर प्लेटों की जांच करें, जुर्माने से बचने के लिए तुरंत आवश्यक सुधार करें।

इन 10 ट्रैफिक सर्कल में काटे गए सबसे अधिक चालान

मयूर विहार -	926
नंद नगरी -	917
खजूरीखास -	845
समयपुर बादली -	826
सिविल लाइंस -	804
भजनपुरा -	798
अशोक विहार -	736
गांधी नगर -	699
सदर बाजार -	579
नरेला -	565

वहीं स्टॉप लाइन का उल्लंघन करने पर एक जनवरी से 31 मार्च 126084 चालान काटे गए जो पिछले साल की तुलना में अभियोजन में 20 की वृद्धि है। पिछले साल तीन माह में 105317 चालान काटे गए थे।

10 बड़े सर्कल जहां हुई सबसे अधिक कार्रवाई

डिफेंस कॉलोनी -	24716
मयूर विहार -	13285
सफदरजंग एन्क्लेव -	12552
लाजपतनगर -	8275
द्वारका -	8247
तिलक नगर -	5800
पंजाबी बाग -	5460
मॉडल टाउन -	4655
मधु विहार -	4272
सिविल लाइंस -	4172

सरकार तुरंत बढाई हुई टोल दरें वापस ले और पुलिस,आरटीओ, बॉर्डररों पर फले भ्रष्टाचार से निजात दिलवाऐ : दिनकर सिंह

नईदिल्ली। अखिल भारतीय ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन के उतर प्रदेश उपाध्यक्ष श्री दिनकर सिंह ने सरकार द्वारा 5 % बढ़ाई गई टोल दरों पर कड़ी आपत्ति जताते हुए सरकार को चेतावनी देते हुए तुरंत प्रभाव से बढ़ाई गई टोल दरें वापस लेने को कहा है अन्यथा ट्रांसपोर्टर सड़कों पर उतर कर आंदोलन करने को मजबूर होंगे। उन्होंने कहा चुनाव के रुझान आते ही भाजपा सरकार ने ट्रांसपोर्टर एवं आमजन के लिए बड़ी मुसीबत खड़ी कर दी है उन्होंने बताया हर प्रदेश के तरह-तरह के जबरदस्ती थोपे गए टैक्सो, पुलिस, आरटीओ, बॉर्डरो पर फले भ्रष्टाचार की वजह से ट्रांसपोर्टर पहले ही घाटे में चल रहे हैं वो डीजल से ज्यादा टोल टैक्स दे रहे हैं गाड़ी खरीदने समय भी एक मुस्त मोटी रकम रोड टैक्स के रूप में देते हैं। श्री दिनकर सिंह ने कहा बिना किसी सरकारी मदद, प्रोत्साहन एवं निम्न दर्जे का ड्राइवर व ट्रांसपोर्टर कहलाते हुए भी 95% देश के कोने-कोने तक जरूरत का समान समय पर पहुंचाने वाले ट्रांसपोर्टोंरों की ऐसी दुर्दशा पहले कभी नहीं हुई। उन्होंने कहा किसानों एवं सैनिकों की तरह देश की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति में अहम भूमिका निभाने वाले ट्रांसपोर्टोंरों को मरने के लिए मजबूर करने की बजाय सरकार उन्हें सुख सुविधा प्रदान कर प्रोत्साहित करे।

सड़क सुरक्षा बढ़ाना: राष्ट्रव्यापी यातायात प्रबंधन सर्वेक्षण का आह्वान

सड़क सुरक्षा एक गंभीर मुद्दा है जो भारत में हर दिन लाखों लोगों को प्रभावित करता है। सड़क बुनियादी ढांचे में सुधार और यातायात कानूनों को लागू करने के लिए समर्पित महत्वपूर्ण संसाधनों और प्रयासों के बावजूद, कई शहर अभी भी प्रभावी यातायात प्रबंधन के साथ संघर्ष कर रहे हैं। इस गंभीर चिंता को दूर करने के लिए, सड़क सुरक्षा ओमनी फाउंडेशन, परिवहन विशेष के सहयोग से, राज्यों और शहरों को उनके यातायात प्रबंधन प्रदर्शन के आधार पर रैंक करने के लिए एक व्यापक राष्ट्रव्यापी सर्वेक्षण का प्रस्ताव करता है। इस पहल का उद्देश्य जागरूकता पैदा करना, प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना और अंततः पूरे देश में सड़क सुरक्षा को बढ़ाना है।

यातायात प्रबंधन सर्वेक्षण की आवश्यकता

भारत के तेजी से शहरीकरण और बढ़ती वाहन आबादी ने यातायात प्रबंधन को एक कठिन कार्य बना दिया है। भीड़भाड़ वाली सड़कें, अनियमित ड्राइविंग व्यवहार और यातायात कानूनों का अपर्याप्त कार्यान्वयन सड़क दुर्घटनाओं की उच्च घटनाओं में योगदान देता है। प्रस्तावित सर्वेक्षण, स्वच्छ भारत अभियान स्वच्छता रैंकिंग की सफलता से प्रेरित होकर, यातायात प्रबंधन और सड़क सुरक्षा पर समान ध्यान और सुधार लाना चाहता है।

सर्वेक्षण के उद्देश्य

मूल्यांकन और रैंकिंग: सभी राज्यों और प्रमुख शहरों की यातायात प्रबंधन प्रथाओं का मूल्यांकन करें, विभिन्न मापदंडों के आधार पर उन्हें सर्वश्रेष्ठ से सबसे खराब तक रैंकिंग दें।

जागरूकता और शिक्षा: सड़क सुरक्षा के मुद्दों और प्रभावी यातायात प्रबंधन के महत्व के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाना।

प्रोत्साहन और प्रोत्साहन: शीर्ष प्रदर्शन करने वालों को पुरस्कार और मान्यता प्रदान करके राज्य और शहर सरकारों को यातायात प्रबंधन में सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करें।

नीति अनुशंसाएँ: यातायात प्रबंधन और सड़क सुरक्षा में सुधार के लिए नीति निर्माताओं को डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि और सिफारिशें प्रदान करें।

क्रियाविधि

सर्वेक्षण चरणबद्ध तरीके से आयोजित किया जाएगा, जिसमें कई मापदंडों को शामिल किया जाएगा जैसे:

सड़क अवसंरचना: सड़कों की गुणवत्ता और रखरखाव, पैदल यात्री क्रॉसिंग और साइकलिंग लेन की उपलब्धता।

यातायात प्रवर्तन: यातायात कानून प्रवर्तन की प्रभावशीलता, यातायात पुलिस की उपस्थिति, और यातायात की निगरानी और नियंत्रण में प्रौद्योगिकी का उपयोग।

दुर्घटना दर: रिपोर्ट की गई सड़क दुर्घटनाओं की संख्या और गंभीरता।

सार्वजनिक धारणा: अपने शहर में यातायात प्रबंधन और सुरक्षा पर नागरिकों की प्रतिक्रिया।

नवोन्मेषी प्रथाएं: स्मार्ट ट्रैफिक सिग्नल, वास्तविक समय यातायात अपडेट और जन जागरूकता अभियान जैसे नवोन्मेषी यातायात प्रबंधन समाधानों का कार्यान्वयन।

कार्यान्वयन और सहयोग

रोड सेफ्टी ओमनी फाउंडेशन और परिवहन विशेष सड़क सुरक्षा और परिवहन में अपनी विशेषज्ञता का लाभ उठाते हुए सर्वेक्षण का नेतृत्व करेंगे। राज्य परिवहन विभागों, नगर निगमों और स्थानीय गैर सरकारी संगठनों के साथ सहयोग व्यापक डेटा संग्रह और सामुदायिक सहभागिता सुनिश्चित करेगा। एकत्रित डेटा का विश्लेषण करने और सटीक रैंकिंग उत्पन्न करने के लिए उन्नत डेटा एनालिटिक्स टूल का उपयोग किया जाएगा

पुरस्कार और मान्यता

शहरों और राज्यों को अपने यातायात प्रबंधन में सुधार के लिए प्रेरित करने के लिए, केंद्र सरकार पुरस्कार और मान्यता की एक प्रणाली शुरू करे। शीर्ष रैंक वाले शहरों और राज्यों को वित्तीय अनुदान, सार्वजनिक स्वीकृति और राष्ट्रीय मंचों पर अपनी सर्वोत्तम प्रथाओं को प्रदर्शित करने के अवसर प्राप्त हों। ये प्रोत्साहन प्रतिस्पर्धा को बढ़ाएंगे और पिछड़े क्षेत्रों को अपने प्रयासों को बढ़ाने के लिए प्रेरित करेंगे।

नागरिकों की सुरक्षा और भलाई सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी यातायात प्रबंधन महत्वपूर्ण है। राष्ट्रव्यापी यातायात प्रबंधन सर्वेक्षण आयोजित करके, रोड सेफ्टी ओमनी फाउंडेशन और परिवहन विशेष का लक्ष्य इस महत्वपूर्ण क्षेत्र पर बहुत जरूरी ध्यान और सुधार लाना है। प्रस्तावित सर्वेक्षण न केवल राज्यों और शहरों की रैंकिंग करेगा बल्कि सड़क सुरक्षा प्रथाओं में जवाबदेही और निरंतर सुधार की संस्कृति भी बनाएगा। केंद्र सरकार के समर्थन और सभी हितधारकों की सक्रिय भागीदारी के साथ, इस पहल में भारत के यातायात प्रबंधन परिदृश्य को बदलने और अनगिनत लोगों की जान बचाने की क्षमता है।

अब कार्रवाई का समय है। आइए हम बेहतर यातायात प्रबंधन और सड़क सुरक्षा प्रथाओं के माध्यम से अपनी सड़कों को सुरक्षित और अपने शहरों को अधिक रहने योग्य बनाने के लिए हाथ मिलाएं।

डॉ अंकुर शरण, राष्ट्रीय मुख्य परिवहन एवं योजना अधिकारी
रोड सेफ्टी ओमनी फाउंडेशन (रजि.)
roadsafetysquad@gmail.com

मा. दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेशानुसार करोल बाग बाज़ार में सभी प्रकार के माल वाहक वाहनों का दोपहर 12:30 बजे से रात्रि 08:00 बजे तक प्रवेश वर्जित है।

Information

General Public is hereby informed that as per the directions of Hon'ble Delhi High Court, **entry of all types of goods vehicles is prohibited in Karol Bagh market from 12:30 PM to 8:00 PM.**

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेशानुसार **करोल बाग बाज़ार में सभी प्रकार के माल वाहक वाहनों का समय दोपहर 12:30 बजे से रात्रि 08:00 बजे तक प्रवेश वर्जित है।**

प्रतिबंधित क्षेत्र
सभी प्रकार की माल वाहक गाड़ियों का करोल बाग़ बाज़ार में दोपहर 12:30 बजे से रात्रि 8:00 बजे तक प्रवेश प्रतिबंधित है।
NO ENTRY
OF ALL CATEGORIES OF GOODS VEHICLES IN KAROL BAGH MARKET FROM 12:30 PM TO 8:00 PM
DELHI TRAFFIC POLICE
WE WANT YOU SAFE

#DPTrafficAdvisory
Delhi Traffic Police | @dtptraffic

इनसाइड

पति की कौन सी आदतें हैं जिन्हे सुधार पाने में पत्नियां भी हैं नाकाम

पति और पत्नी का रिश्ता सबसे पवित्र रिश्ता होता है। बहुत सारा प्यार, विश्वास , बहुत सी उम्मीदें और आपसी सामंजस्य का मिश्रण होता है ये नाजुक सा रिश्ता। वैसे ऐसा माना जाता है कि प्यार एक ऐसा नुस्खा है जो किसी को भी बदल सकता है, और जो किसी को प्यार करता है वो उसके लिए अपने आपको बदल सकता है लेकिन क्या आप जानते हैं बेहद प्यार होने के बाद भी पति अपनी कुछ आदतें हैं जिन्हें कभी नहीं सुधार पाते और पत्नियां भी पति की इन आदतों को सुधार पाने में असफल होती हैं।

मां या परिवार की किसी अन्य महिला से तुलना

पुरुषों की सबसे ख़ास आदत होती है कि वो हर छोटी बड़ी बात पर अपनी पत्नी की तुलना अपनी मां , भाभी या बहन से करते हैं। तुम्हारे खाने में मां के हाथों का स्वाद नहीं हैं ,तुम मेरी भाभी जैसी स्मार्ट नहीं हो या फिर तुम्हे मेरी बहन से कम सैलरी मिलती है जैसी बातें पति अपनी पत्नी से करते हैं।

क्रिकेट के लिए प्यार

ज्यादातर पति क्रिकेट के दीवाने होते हैं। कई बार ऐसा होता है कि पत्नी का फेवरेट सीरियल आ रहा होता है लेकिन पति अपना मैच देख रहे होते हैं। क्रिकेट के लिए उनकी दीवानगी इस हद तक होती है की पत्नी सामने बैठी रहती है लेकिन उसकी बातों पर वो ध्यान नहीं देते हैं।

किसी से रास्ता पूछने से कतराना

आमतौर पर पतियों की आदत होती है कि वो कहीं बाहर घूमने जाते हैं तो किसी से भी रास्ता नहीं पूछते हैं चाहे इसकी वजह से उनका टाइम ही क्यों न बर्बाद हो जाए। पतियों को लगता है की उन्हें हर चीज़ का सबसे ज्यादा नॉलेज है।

छोटे-छोटे झूठ बोलने की आदत

पतियों की एक आम आदत है कि वो बात - बात पर पत्नियों से झूठ बोलते हैं जैसे पत्नी फ़ोन करके पूछती है की कितनी देर में घर आ रहे हैं तो वो बताते हैं १५ में जबकि उस टाइम तक वो ऑफिस में ही होते हैं। इसके अलावा ऑफिस की मीटिंग के बहाने वो किसी फ्रेंड के साथ घूम रहे होते हैं जो वो पत्नी को नहीं बताते हैं।

शराब-सिगरेट की लत

ऐसा बोला जाता है की पत्नी अपने पति की हर आदत को बदल सकती है लेकिन शराब और सिगरेट की लत वो कभी पत्नी के कहने से नहीं छोड़ते।

खूबसूरत लड़कियों को देखना

पत्नी से बेइंतहां प्यार करने के बाद भी पति बाहर दूसरी लड़कियों को देखते हैं वो ऐसा तब भी करते हैं जब वो अपनी पत्नी के साथ होते हैं।

पेरेंटिंग

टीनएजर्स को पियर प्रेशर से कराएं आजाद

हाल ही में क्रिमिनल जस्टिस सीजन 3 के एक दृश्य में देखा कि टीवी जगत में नाम कमा चुकी टीनएज अदाकारा जारा किस तरह दोस्तों के मजाक उड़ाने के बाद पेरेंट्स से छुपकर लेट नाईट पार्टी में जाती है। यही नहीं पार्टी में दोस्त उसे कम न समझे इसलिए ड्रिंक भी करती है। इस दृश्य को देख यही लगा कि कम उम्र में बच्चे प्रेशर में आकर कई बार गलत कदम भी उठा सकते हैं। टीनएज उम्र का वो पड़ाव है जहां बच्चे खुद ही सब कुछ करना पसंद करते हैं। वे पेरेंट्स की छाँव से बाहर निकल दुनिया में अपनी पहचान बनाने की शुरूआत करना चाहते हैं। इस उम्र में ज्यादातर बच्चे पेरेंट्स से ज्यादा दोस्तों के साथ समय बिताना और उनके हिसाब से काम करना शुरू कर देते हैं। दोस्तों और स्कूल में बेस्ट होने की चाह और आज के अधिक स्पर्धा वाले माहौल में वे कब एक अनचाहे दबाव तले दब जाते हैं पता ही नहीं चलता। पियर प्रेशर का असर सकारात्मक और नकारात्मक हो सकता है। कई बार उन्हें अपने लुक्स और बॉडी की वजह से भी दोस्तों के मजाक को सहना पड़ता है। तो कई बार वे अपने दोस्तों की अच्छी आदतों से प्रभावित होकर खुद में इम्प्रूवमेंट कर आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं। ऐसे में पेरेंट्स अपने टीनएज बच्चों की इस पियर प्रेशर से बचने और निपटने में मदद कर सकते हैं। आइए जानते हैं कि बच्चों के पियर प्रेशर को किस तरह समझें और उनकी मदद करें।

...पिता भी जानें अपनी बेटी की मन की बात

जनरेशन गैप को दूर करने के लिए सबसे पहले कम्यूनिकेशन गैप को दूर करना बेहद जरूरी है। जो उम्र के साथ बेटी और पिता के मध्य खुद-ब-खुद बढ़ने लगता है। अकसर घरों में देखा जाता है कि बेटियों की बढ़ रही उम्र के साथ उन्हें घर के कामकाज में लगाने का प्रयास किया जाता है। मगर उनसे ये नहीं पूछा जाता कि वे क्या करना चाहती हैं। अपने बच्चों को समझने की जिम्मेदारी केवल हमारी होती है। ऐसे में पिता को अपनी बेटी से बात करनी चाहिए और उसके मन की बात को जानना चाहिए।

जनरेशन गैप को कम करने की जिम्मेदारी दोनों पीढ़ियों की होती है। अगर हम अपने बुजुर्गों को समझने लगेंगे और उन्हें सम्मान देंगे, तो वे भी हमारी वाणी, हमारे लिबास और हमारी बात को तवज्जो देंगे। हर रिश्ते की बुनियाद समझदारी और विश्वास पर टिकी होती है। खासतौर पर घर की बेटियों को ऐसा लगता है कि पिताजी हमें नहीं समझते और कई घर की बेटियों को ऐसा लगता है कि पिताजी हमें नहीं समझते। कई बार पिता के सख्त रवैये को देख बेटियां पिता से दूरी बनाने लगती हैं। धीरे-धीरे जनरेशन गैप बढ़ने लगता है और उन्हें पिता से नफरत होने लगती है। वहीं पिता की आकांक्षाएं बेटी से बढ़ने लगती हैं। वे चाहते हैं कि हमारी बेटी संस्करी हो, जिसे अच्छे-बुरे की समझ भली प्रकार से होनी चाहिए। आइए जानते हैं, वो कौन सी तरीके है, जिनसे पुत्री और पिता के मध्य बढ़ते गैप को कम किया जा सकता है।

एक दूसरे पर विश्वास करें

विश्वास पर हर रिश्ता टिका होता है चाहे वो पति पत्नी का हो, माता-पिता या बच्चों का। सबसे पहले आप अपनी बेटी पर विश्वास करना सीखें। जीवन में परिवर्तन जरुरी है। अगर आप नई पीढ़ी के साथ तालमेल बैठाना चाहते हैं, तो खुद को बदलें और बेटे की ही तरह बेटी पर भी विश्वास जताएं। अगर बेटी जीवन में कुछ नया करना चाहती है तो उसके फैसलें में शामिल हों। वहीं बेटी को भी अपने माता-पिता को सम्मान देना चाहिए और उन्हें समझाने का प्रयत्न करना चाहिए। उन्हें कभी भी पर धोखे में नहीं रखना चाहिए।

जरूरी है बातचीत

जनरेशन गैप को दूर करने के लिए सबसे पहले कम्यूनिकेशन गैप को दूर करना बेहद जरूरी है। जो उम्र के साथ बेटी और पिता के मध्य खुद-ब-खुद बढ़ने लगता है। अकसर घरों में देखा जाता है कि बेटियों की बढ़ रही उम्र के साथ उन्हें घर के कामकाज में लगाने का प्रयास किया जाता है। मगर उनसे ये नहीं पूछा जाता कि वे क्या करना चाहती हैं। अपने बच्चों को समझने की जिम्मेदारी केवल हमारी होती है। ऐसे में पिता को अपनी बेटी से बात करनी चाहिए और उसके मन की बात को जानना चाहिए। फिर चाहे वो बात करियर से जुड़ी हो या फिर विवाह सें। इसके अलावा घर के फैसलों में बेटे के साथ-साथ बेटी का सुझाव भी जरुरी है, जो आगे चलकर उसे आने वाली जिंदगी में मदद करेंगे। अगर आपकी लाडो अभी छोटी है, तो उसे पब्लिक प्लेस या फिर किसी भी कार्यक्रम में अपने साथ लेकर जाएं और उससे ज्यादा बातचीत करें, ताकि वो आपके करीब आ सके और आप में अपना मित्र खोज सके।

बेटी के साथ आउटिंग पर जाएं

माता पिता को लगता है कि अब बच्चे बड़े हो गए है तो उन्हें साथ क्यों ले जाना। मगर यही वो क्ष ण होते हैंजब बेटी अपने पिता को अपनी ख्वाहिशों और अपने सपनों के बारे में बता पाती है। चाहे आप मार्निंग वॉक पर जा रहे हैं या घर का कोई सामान लेने जा रहे हैं, बेटी को अपने संग रखें। इससे बेटी खुद को आपके करीब समझेगी।

एक दूसरे की रूचि को समझे

एक पिता होने के नाते बच्चों की खुशियों का ख्याल रखना आपका कर्तव्य है। बेटी की पसंद-नापंसद को समझे। इसके अलावा ये जानने का प्रयास करें कि संगीत, पेटिंग, कुकिंग या फिर खेल। इनमें से किन चीजों में आपकी बेटी की रूचि है। जो भी चीज उसे पसंद है, आप उसे करने में बेटी की मदद करें। ये मामूली प्रयास पिता और बेटी के बीच जनरेशन गैप को कम करने का एक आसान तरीका है।

बेटी की न को भी स्वीकारें

ये जरुरी तो नहीं कि बच्चे हर बार आपके आदेशों के अनुसार ही चलें। कई बार बच्चे अपने फैसलें अपनी मर्जी से भी लेना चाहते हैं। ऐसे में अकसर पिता का रवैया बेटियों की ओर असहमति का रहता है, जो पूर्ण रूप से गलत है। हमें बच्चों को सुनना चाहिए और उनकी पसंद-नापसंद का भी पूरा ख्याल रखना चाहिए। अगर वो किसी कार्य को करने से मना कर देते हैं, तो उस बात पर उन्हें फटकार सुनाने की बजाय, उनका सम्मान करें और उन्हें मर्जी करने दें। अन्यथा कई बार बच्चे गलत संगति का भी शिकार हो जाते हैं।

मां का रोल है अहम

अगर बेटी और पिता में एक जनरेशन गैप बढ़ रहा है, तो ऐसे में मां का रोल सबसे अहम माना जाता है। मां को अपनी बेटी में आत्मविश्वास जगाना चाहिए, ताकि वे मुश्किल हालातों का सामना करने में सक्षम हो सके। इसके अलावा अब तक जो बात मां के माध्यम से बेटी पिता तक पहुचांती रही है, वे अब खुद पिता से उस बारे में बात करें, ताकि बेटी के मन में पिता के प्रति जो डर है या नाराजगी है, वो खत्म हो जाए।

समय देना है जरूरी

बहुत से घरों में देखने का मिलता है कि उम्र बढ़ने के साथ-साथ पिता और बेटियों में एक दूरी बनने लगती है। पिता के ऑफिस से आने से पहले ही बेटी सो जाती हैं जब कि अगर मां देर रात तक नहीं लौटती तो वहीं बेटी जागकर उनका इंतजार करती हैं। कारण मां के प्रति ज्यादा लगाव और प्यार। चाहे मां कामकाजी हो या फिर होममेकर वे बच्चों को डांटती भी है और पुचकारती भी है। मगर काम की व्यस्तता के कारण पिता का बेटी से ज्यादा संपर्क नहीं हो पाता है। कारण समय की कमी। इस समस्या को दूर करने के लिए रोजाना ऑफिस से आकर अगर आप कुछ वक्त अपनी बेटी, बेटे और पत्नी के साथ व्यतीत करते हैं, तो आप आसानी से उन्हें समझने लगेगें। इससे बच्चों और पिता का संबंध मजबूत बनने लगता है।

रिश्तों में रोक-टोक से बचें और स्पेस दें

शादी से पहले हर लड़की को लड़के का टोकना और हर लड़के को लड़की का टोकना अच्छा लगता है। सिर्फ इतना ही नहीं शादी के बाद भी कुछ हद तक सह लेना भी अच्छा लगता है, क्योंकि उस हस्तक्षेप में प्यार छिपा होता है, पर जब रोक-टोक ज्यादा होने लगती है तो यह मुसीबत बन जाती है। मनोचिकित्सक समीर पारिख कहते हैं कि जब एक लड़का या लड़की एक-दूसरे को प्यार करते हैं तो उन्हें एक-दूसरे की हर बात अच्छी लगती है फिर चाहे वो कितनी भी रोक-टोक क्यों ना लगाए, क्योंकि उस रोक-टोक में दोनों को प्यार और अपनत्व नजर आता है, जिसके चलते वह कुछ नहीं बोलते। एक-दो बार की रोक-टोक हर किसी को अच्छी लगती है, पर जब यह हर काम में हो तो किसी आफत से कम नहीं लगती। हर समय किये जाने वाले हस्तक्षेप से नुकसान ही होता है।

रोक-टोक से होने वाले नुकसान हर इंसान को अपनी आजादी पसंद होती है। पर यदि उसकी आजादी पर रोक लगाई जाए तो रिश्तों में मिठास नहीं बल्कि कड़वाहट पैदा हो जाती है, जैसे

रिश्तों में जब रोक-टोक शुरू हो जाती है तो पार्टनर को लगता है कि सामने वाला उसे नीचा दिखाने की कोशिश कर रहा है।

ज्यादा हस्तक्षेप करने से पार्टनर एक-दूसरे से बातें छुपाने लगते हैं। उन्हें लगता है कि अगर कुछ अच्छा बताया तो भी सुनना पड़ेगा और खराब बताया तो भी, इससे बेहतर है कि बात ही ना बताएं तो ज्यादा अच्छा है।

हर वक्त हस्तक्षेप करने से शेयर करने जैसा जज़्बा भी कहीं पीछे रह जाता है, जिससे रिश्ते में दूरी आना स्वाभाविक हो जाता है।

यदि आप हर समय साथी को उसकी गलतियां बताने और टोकने में लगे रहते हैं तो उसे आपकी सही बात भी गलत लगने लगती है।

अधिक हस्तक्षेप से संबंधों में विश्वास की कमी पैदा हो जाती है, जिसके चलते एक-दूसरे के प्रति आदर व सम्मान खत्म होने लगता है, जिसे वापस पाना मुश्किल हो जाता है।

कई बार नियंत्रण की जरूरत हमारी स्वयं की समझी हुई कमियों के कारण पड़ती है, जिसे हम ठीक से नियंत्रित नहीं कर पाते। जिसका परिणाम यह होता है कि हम अपनी इन कमियों को अपने साथी पर थोप देते हैं।

हस्तक्षेप के कारण नकारात्मक भाव जैसे जलन, शक और एक-दूसरे के प्रति ईमानदार न होने जैसी सोच दिलों में घर कर जाती है।

हस्तक्षेप के चलते साथी अपने आपको समान रूप से महत्वपूर्ण महसूस नहीं करते हैं एवं अपने संबंधों और अपने जीवन को अपने नियंत्रण में नहीं समझते, जिसके कारण आगे चल कर उनमें निराशा और असहायता की

भावना पैदा हो जाती है।

मनोचिकित्सक समीर पारिख कहते हैं कि यह सभी पहलू एक नाखुश रिलेशनशिप की ओर इशारा करते हैं, जहां पर साथी घुटन और खुद को पिंजरे में बंद महसूस करते हैं। ऐसे में प्यार दर्शाने वाले क्रियाकलाप भी दूसरे साथी को उसके जीवन में नियंत्रण स्थापित करने वाले दिखाई पड़ते हैं।

जब संबंधों में हस्तक्षेप अधिक होने लगता है

तो आपका साथी अपनी व्यक्तिगत जगह बनाये रखने के लिये झूठ का सहारा लेने लगता है।

कैसे बचें रोक-टोक से

डॉक्टर समीर पारिख कहते हैं कि ऐसे समय में यह समझना भी जरूरी है कि आप अपने साथी को अपने नियंत्रण में या उसे अपने अधिकार में रखना क्यों चाहते हैं। क्या इस तरह का हस्तक्षेप करने का जोखिम उठाना आपके संबंधों के लिये उपयुक्त है? क्या आपके संबंधों में विश्वास की कमी है और इसके चलते आप हस्तक्षेप या नियंत्रण करना चाहते हैं? यह कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर प्राप्त करना महत्वपूर्ण है ताकि आपका संबंध स्वस्थ रहे और उसका एक उज्जवल भविष्य हो।

रोक-टोक से होने वाले नुकसान हर इंसान को अपनी आजादी पसंद होती है। पर यदि उसकी आजादी पर रोक लगाई जाए तो रिश्तों में मिठास नहीं बल्कि कड़वाहट पैदा हो जाती है

बेटियों में बचपन से ही आत्मविश्वास भरना बेहद जरूरी है

आप आप एक बेटी के माता-पिता हैं तो ये बिलकुल भी ना सोचें कि वो एक बेटी होने के नाते जीवनभर संघर्ष करेगी। आप उसकी किसी ताकत या कमजोरी की धारणा बिलकुल ना बनाएं। उसकी खूबियों को प्रोत्साहित करने के साथ उसकी कमजोरियों को भी समय पर पहचानें और उसे सुधारने की कोशिश करें।

कहते हैं कि बेटियां अपने माता-पिता के लिए बेहद ख़ास होती हैं। जितनी वो खास होती हैं उतनी ही ख़ास उनकी देखभाल भी होती है। जैसे-जैसे बेटियां बड़ी होती जाती हैं, वैसे-वैसे उनके प्रति माता-पिता की जिम्मेदारी भी बढ़ती जाती है। बात अगर पुराने जमाने की करें तो पहले घर-परिवार में बेटियों के पैदा होने पर उन्हें शगुन और साक्षात देवी लक्ष्मी का रूप माना जाता था। लेकिन आज के समय में भी बेटियां अपने आत्मविश्वास से ऊंचे से ऊंचा आसमान छूने की प्रतिभा रखती हैं। आज के समय में उनका दर्जा लड़कों से कम नहीं है। ये सब कुछ उनके माता-पिता की परवरिश का नतीजा होता है, जिससे उनका सिर गर्व से ऊपर उठता है। बहुत से माता-पिता होते हैं जो अपने बच्चों की तरक्की देखना चाहते हैं। वो चाहते हैं कि उनकी बेटी हर दिशा में आगे बढ़े, चाहे वो कोई भी काम क्यों ना हो। यदि आप के घर में भी बेटी है तो आज का ये लेख खास आपके लिए है, जिसके जरिये हम आपको बताएंगे कि कैसे आप उसकी सही तरीके से परवरिश करें जिससे वो आत्मविश्वास से भरी रहे। तो चलिए फिर शुरू करते हैं।

1. बेटी को करें प्रोत्साहित–जब बेटी बड़ी होती है, तो उसकी जरूरतें भी अल्फ होती चली जाती हैं। आप उसे जमीन से जुड़े रहना सिखाएं। अगर वो आगे बढ़ाने के लिए अपने भविष्य को लेकर कुछ चुनाव करती है तो उसे हताश ना करें। उसका साथ दें। एक बच्चे के लिए उसके माता-पिता का साथ बेहद जरूरी होता है। आप उसे प्रोत्साहित करें। ताकि उसके अंदर का आत्मविश्वास कम ना हो।

2. बेटी की करें तारीफ– आप अपनी बेटी को बताएं की वो दुनिया की सबसे खूबसूरत लड़की है। उसके अंदर कोई भी कमी नहीं है। उकसे अंदर ऐसी बात है जो उसे बाकियों से जुदा बनाती है। इससे बिटिया का आत्मविश्वास और भी बढ़ेगा।

3. सीखने का दें अवसर—अगर बेटी को संगीत या किसी भी तरह की एक्टिविटी में इन्ट्रेस्ट हैं लेकिन वो इन में फिट नहीं बैठते। ऐसे में अगर आप उसका साथ नहीं देंगे तो उसका मनोबल टूटता चला जाएगा। उसे सीखने का अवसर जरुर दें। उसे अपनी असल प्रतिभा धीरे-धीरे खुद समझ आएगी और वो आगे बढ़ेगी।

4. बेटी को सिखाएं समाजिकता—बेटी को समाज और उससे जुड़ी बातों के बारे में सिखाएं। उसे सिखाएं कि अगर उससे कोई दोस्ती नहीं करता तो उसका क्या कारण हो सकता है। समाज के प्रति उसके अंदर नकारात्मकता ना भरें। वरना एक समय के बाद वो समाज को नकारात्मक नजरिये से देखने लगेगी। उसे सभी पहलुओं के बारे में जरुर सिखाएं।

5. बढाएं बेटी की क्षमता–अगर आपकी बेटी अपना होमवर्क कर रही है तो यूं ही उसकी मदद ना करें। वो जब तक आपसे मदद नहीं मांगती तब तक उसकी मदद मत करें। उसे उसकी क्षमता के अनुसार काम करने दें। उसे अपने दम में हमेशा आगे बढ़ने के लिए ही प्रोत्साहित करें।

6.ना थोपें अपनी मर्जी– आज के समय में बेटियां स्पोर्ट्स को ज्यादा पसंद कर रही हैं, और उसी में अपना भविष्य भी तय कर रही हैं। अगर वो एक जिमनास्टिक बनना चाहती है या फुटबॉल खेलना चाहती है तो उसे आगे बढ़ने दें, ना की अपना फैसला या अपनी चाह उसपर थोपें। आप ये जरुर पता लगा सकते हैं, कि वो किस खेल को खेलने के लिए ज्यादा सक्षम है। आप खुद उसके लिए कोई खेल तय ना करें।

7. मत बनाइए कमजोर—आप आप एक बेटी के माता-पिता हैं तो ये बिलकुल भी ना सोचें कि वो एक बेटी होने के नाते जीवनभर संघर्ष करेगी। आप उसकी किसी ताकत या कमजोरी की धारणा बिलकुल ना बनाएं। उसकी खूबियों को प्रोत्साहित करने के साथ उसकी कमजोरियों को भी समय पर पहचानें और उसे सुधारने की कोशिश करें।

8. सेक्सिज्म के लिए करें तैयार–बहुत लोगों की सोच है कि बेटियां वो काम नहीं कर सकती जो बेटे कर सकते हैं। अगर आप अपनी बेटी को वो टीवी शो या फ़िल्में देखते हुए नोटिस करते हैं जो पूरी गर्ल्स पर आधारित होती है तो उसे समझिये और उसे सेक्सिज्म के लिए तैयार करें।

9. बेटी को दिखाएं रोल मॉडल–अक्सर ऐसा होता है जब भी आप कोई न्यूज़ देखते या पढ़ते हैं तो उसमें आपको कई महिलाएं सीनेटरी, खिलाड़ी, चिकित्सक या एथलीट दिखेंगी। ये अच्छा तरीका होता है अपनी बेटी को इन महिलाओं के बारे में दिखाना और समझाना। आप इम्में से कोई भी अपनी बेटी के लिए रोल मॉडल चुनने में उसकी मदद कर सकते हैं।

तो ये कुछ ऐसी खास टिप्स हैं, जिनकी मदद से आप अपनी बिटिया को अच्छी परवरिश देने के साथ उसमें आत्मविश्वास भर सकते हैं। अगर आपकी भी बेटी है तो आप हमारी बताई हुई टिप्स को जरुर आजमाएं। आपको इससे बेहतर परिणाम मिलेगा।

'बेकार के दोषारोपण से बचें', दिल्ली के मंत्रियों को एलजी की सलाह, गहराते जल संकट पर दिया आश्वासन

उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने सोमवार को दिल्ली के मंत्री सौरभ भारद्वाज और आतिशी से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने मंत्रियों को आश्वासन दिया कि वह हरियाणा सरकार के सामने जल आपूर्ति का मामला उठाएंगे। इसके साथ ही उन्होंने आरोप-प्रत्यारोप में न उलझकर और सौहार्दपूर्ण ढंग से मुद्दों को सुलझाने की सलाह दी है। बता दें कि दिल्ली में जल संकट गहरा रहा है।

नई दिल्ली। उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने सोमवार को दिल्ली के मंत्री सौरभ भारद्वाज और आतिशी से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने मंत्रियों को आश्वासन दिया कि वह हरियाणा सरकार के सामने जल आपूर्ति का मामला उठाएंगे। इसके साथ ही उन्होंने आरोप-प्रत्यारोप में न उलझकर और सौहार्दपूर्ण ढंग से मुद्दों को सुलझाने की सलाह दी है। बता दें कि दिल्ली में जल संकट गहरा रहा है और इसके लिए आप सरकार हरियाणा पर पानी न देने का आरोप लगा रही है।

आम आदमी पार्टी (AAP) की दिल्ली सरकार ने भाजपा की हरियाणा सरकार पर पिछले कई दिनों से दिल्ली के हिस्से की पानी की आपूर्ति न करने का आरोप लगाया है। दिल्ली भीषण गर्मी की वजह से जल संकट से गुजर रही है।

बैठक के बाद आतिशी ने क्या कहा?

बैठक के बाद आतिशी ने कहा कि उपराज्यपाल ने उन्हें आश्वासन दिया कि वह हरियाणा सरकार से बात करेंगे, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि राष्ट्रीय राजधानी के हिस्से का 1,050 क्यूसेक पानी मूनक नहर में छोड़ा जाए।

एलजी ने दिया आश्वासन

एलजी ने कहा कि मंत्रियों को आश्वासन दिया कि वह हरियाणा सरकार के सामने जल संकट का मामला उठाएंगे और उनसे मानवीय आधार पर अतिरिक्त पानी देने का अनुरोध करेंगे। सक्सेना ने मंत्रियों को बेकार के दोषारोपण से बचने और पानी की बर्बादी रोकने की सलाह भी दी।

एलजी ने मंत्रियों को व्यर्थ के दोषारोपण से बचने और पड़ोसी राज्यों के साथ सौहार्दपूर्ण तरीके से इस मुद्दे को सुलझाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि अगर हरियाणा अपने आवंटित हिस्से से अतिरिक्त पानी देता भी है, तो दिल्ली के पास पानी को उपचारित करने और दिल्ली के लोगों को आपूर्ति करने के लिए पर्याप्त जल उपचार संयंत्र (डब्ल्यूटीपी) और क्षमता नहीं है।

दिल्ली सरकार को इन कामों पर देना चाहिए जोर

एलजी ने दिल्ली सरकार को सलाह दी है कि मूनक नहर की मरम्मत कराई जाए और चोरी रोक दी जाए तो 25 प्रतिशत पानी की बर्बादी रोकी जा सकती है। 54 प्रतिशत बेहिसाब पानी की बर्बादी होती है (इसमें 40 प्रतिशत पानी की बर्बादी लीकेज और चोरी शामिल है)। अगर इन सभी को रोक दिया जाए तो दिल्ली में संकट काफी हद तक रोक दिया जा सकता है।

'दिल्ली के हक का पानी भी रोक रही हरियाणा सरकार', जल संकट को लेकर आप ने फिर साधा बीजेपी पर निशाना

दिल्ली में जल संकट को लेकर आम आदमी पार्टी ने भाजपा पर हमला बोला है। उन्होंने कहा कि हरियाणा के लोग तो इतने अच्छे होते हैं कि उनसे पानी मांगो तो साथ में लस्सी भी देते हैं। वहीं हरियाणा की BJP सरकार दिल्ली के हक का पानी भी रोक रही है। इससे भी बढ़कर दिल्ली के एलजी वीके सक्सेना साहब हैं।

नई दिल्ली। जल संकट के लिए आप ने एक बार फिर से भाजपा पर निशाना साधा है। पार्टी की मुख्य प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ ने थोड़ी ही देर पहले पत्रकार वार्ता कर कहा कि भाजपा की हरियाणा सरकार न खुद दिल्ली को उसके हिस्से का पूरा पानी दे रही है और न अन्य राज्य को देने दे रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि हिमाचल प्रदेश से दिल्ली को मिलने वाला 137 क्यूसेक पानी भी हरियाणा ने रोक लिया है। यही नहीं, मुनक कैनाल के जरिये दिल्ली के हिस्से के 1050 क्यूसेक पानी में भी 200 क्यूसेक की कटौती की जा रही है। कक्कड़ ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश का भी पालन नहीं हो रहा, दिल्ली के एलजी जनता का नहीं बल्कि भाजपा के हितों का ध्यान रखते हैं।

एलजी साहब को नहीं मालूम सुप्रीम कोर्ट का आदेश- प्रियंका कक्कड़

हरियाणा के लोग तो इतने अच्छे होते हैं कि उनसे पानी मांगो तो साथ में लस्सी भी देते हैं। वहीं हरियाणा की बीजेपी सरकार दिल्ली के हक का पानी भी रोक रही है। इससे भी बढ़कर दिल्ली के उपराज्यपाल साहब हैं। वह कह रहे हैं कि दिल्ली सरकार हरियाणा की BJP सरकार पर गलत आरोप लगा रही है। एलजी साहब को शायद सुप्रीम कोर्ट का आदेश नहीं मालूम है। वह चाहते तो हरियाणा की बीजेपी सरकार से बात करके मामला सुलझा सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। एलजी साहब आप दिल्ली की जनता के लिए जवाबदेह हैं ना की बीजेपी हेडक्वार्टर के लिए।

हरियाणा सरकार के खिलाफ किया प्रदर्शन

उन्होंने कहा कि 30 जून तक मानसून दिल्ली पहुंच जाएगा। तभी तक थोड़ी दिक्कत है, लेकिन भाजपा पानी पर भी नकारात्मक राजनीति कर रही है। लेकिन पार्टी भी सड़क से लेकर कोर्ट तक अपना संघर्ष जारी रखेगी। दिल्ली को उसके हक का पानी दिलवाकर रहेगी। इसके साथ ही आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने हरियाणा सरकार द्वारा दिल्ली का पानी रोके जाने के विरोध में मंडी हाउस चौराहे पर प्रदर्शन किया।

सोमनाथ भारती सिर मुंडाएंगे या नहीं; आप नेता ने खुद बताया

नरेंद्र मोदी ने रविवार (9 जून) को तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। इस पर आम आदमी पार्टी के नेता सोमनाथ भारती ने अपने सिर मुंडवाने वाले बयान पर यूटर्न लिया है। आप नेता ने पहले नरेंद्र मोदी के तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने पर अपना सिर मुंडवाने की कसम खाई थी। सोमनाथ भारती ने रविवार को अपना वादा पूरा करने से इनकार कर दिया।

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) के नेता सोमनाथ भारती ने अपने 'सिर मुंडवाने' वाले बयान पर यूटर्न लिया है। आप नेता ने पहले नरेंद्र मोदी के तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने पर अपना सिर मुंडवाने की कसम खाई थी। सोमनाथ भारती ने रविवार को अपना वादा पूरा करने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि मोदी का तीसरा कार्यकाल केवल उनका अपना नहीं है, बल्कि एनडीए के सहयोगी दलों के समेकित प्रयासों का परिणाम है।

मालूम हो कि लोकसभा चुनाव के एग्जिट पोल आने के बाद एक जून को आम आदमी पार्टी (आप) नेता और नई दिल्ली लोकसभा क्षेत्र से आप प्रत्याशी सोमनाथ भारती ने यह बयान दिया था। उन्होंने घोषणा की थी कि अगर नरेन्द्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बने तो वो अपना सिर मुंडवा लेंगे।

एग्जिट पोल को लेकर किया था दावा

सोमनाथ ने दावा किया था कि चार जून को मतगणना के बाद सारे एग्जिट पोल गलत साबित हो जाएंगे। सोमनाथ भारती ने कहा था कि आइएनडीआइ गठबंधन दिल्ली की सभी सातों सीट पर जीत दर्ज करेगी। उन्होंने अपने सिर मुंडवाने की घोषणा की तुलना दिवंगत भाजपा नेता सुषमा स्वराज से की थी।

नई दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी व सुषमा स्वराज की बेटी बांसुरी स्वराज ने चुनाव में भारती को शिकस्त दी है। बता दें कि सुषमा स्वराज ने वर्ष 2004 के लोकसभा चुनाव में कहा था कि अगर सोनिया गांधी पीएम बनती हैं तो वो अपना सिर मुंडवा लेंगी। हालांकि, ऐसी स्थिति नहीं बनी और तब मनमोहन सिंह पीएम बने थे। वहीं, इस मामले पर भाजपा नेता तेजिंदर बग्गा ने एक्स पर पोस्ट कर सोमनाथ से कहा था कि कृपया जो भी करें उसका वीडियो अपलोड करें।

सफदरजंग अस्पताल में पहली बार हुई पांच रोबोटिक सर्जरी

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। वीएमएमसी और सफदरजंग अस्पताल में स्पोर्ट्स इंजरी सेंटर (एसआईसी) एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध संस्थान है, जो शीर्ष खिलाड़ियों और सामान्य रोगियों को एक ही छत के नीचे व्यापक सर्जिकल और पुनर्वास सेवाओं के रूप में प्रीमियम स्वास्थ्य सेवा प्रदान करता है, जो अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप है।

केंद्र को हाल ही में अपग्रेड किया गया है, और एक नए भवन में स्थानांतरित किया गया है, जिसका उद्घाटन जनवरी 2024 में किया गया था, जिससे दी जाने वाली सेवाओं का दायरा और अधिक बढ़ गया है। पिछले पांच महीनों में ओपीडी उपस्थिति और सर्जिकल जनगणना दोगुनी हो गई है, जो स्पष्ट रूप से केंद्र की बढ़ती लोकप्रियता को दर्शाती है। शीर्ष खिलाड़ियों को अत्याधुनिक सुविधाएं प्रदान करने की प्रतिबद्धता के साथ, केंद्र ने सीधे निदेशक एसआईसी की देखरेख में एक अलग खेल चिकित्सा इकाई शुरू की है, जिसमें हाइड्रोथेरेपी पूल, अंडरवाटर ट्रेड मिल, बैलेंस सिस्टम आदि जैसी अत्याधुनिक सुविधाएं हैं, जिनमें से सभी को कार्यात्मक बनाया गया है। हाल ही में केंद्र ने जून के पहले सप्ताह में एक रोबोटिक घुटने के प्रतिस्थापन कार्यशाला का आयोजन किया, जिसमें निदेशक एसआईसी, डॉ दीपक जोशी और वरिष्ठ सलाहकार डॉ नवल भाटिया के नेतृत्व वाली टीमों द्वारा सफदरजंग अस्पताल में पहली बार पांच रोबोटिक सर्जरी की गई।

रोबोटिक घुटना प्रतिस्थापन सर्जरी

आधुनिक समय की सबसे उन्नत तकनीकों में से एक है जो सटीक हड्डी काटती है, इष्टतम ऊतक संतुलन और सही अंग संरेखण सुनिश्चित करती है। यह हार्डवेयर दीर्घायु में सुधार के अलावा रोगी के बेहतर परिणामों और पोस्ट ऑपरेटिव दर्द को कम करने में मदद करता है, जिससे ऑपरेशन के बाद की शुरुआती रिकवरी में मदद मिलती है। यह तकनीक आधुनिक मशीनरी और डॉक्टर के कौशल के बीच समन्वय का एक उत्कृष्ट उदाहरण है जहां ऑपरेटिंग सर्जन द्वारा संभाले जाने वाला रोबोटिक हाथ उच्चतम स्तर की सटीकता सुनिश्चित करता है। पूर्वनिर्धारित शारीरिक निर्देशांक और रोबोटिक मशीनरी की मदद से सर्जन यह सुनिश्चित करता है कि हड्डी को पूरी तरह से काटा जाए जिससे उत्कृष्ट प्रत्यारोपण फिटिंग और न्यूनतम सर्जिकल रुग्णता और रोगी के शीघ्र पुनर्वास के साथ बेहतर सर्जिकल परिणाम की सुविधा मिलती है। इस कार्यशाला की न केवल सभी लाभार्थियों ने बल्कि साथी डॉक्टरों ने भी बहुत सराहना की, जिन्हें अपने प्रशिक्षण के दौरान ऐसी उन्नत सर्जिकल तकनीकों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुआ।

'हरियाणा सरकार के सामने हाथ जोड़कर खड़े हैं' आतिशी ने दिल्ली में छाए जलसंकट पर एलजी से की मुलाकात

दिल्ली की जल मंत्री आतिशी ने सोमवार को उपराज्यपाल वीके सक्सेना से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने एलजी को दिल्ली में जलसंकट के बारे में अवगत कराया। उन्होंने हरियाणा सरकार से मूनक नहर से कम आने वाले पानी को बढ़ाने की मांग की है। आतिशी ने वजीराबाद वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट में 30 MGD प्रोडक्शन कम हुआ है।

नई दिल्ली। दिल्ली की जल मंत्री आतिशी ने सोमवार को उपराज्यपाल वीके सक्सेना से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने एलजी को दिल्ली में जलसंकट के बारे में अवगत कराया। उन्होंने हरियाणा सरकार से मूनक नहर से कम आने वाले पानी को बढ़ाने की मांग की है।

आतिशी ने वजीराबाद वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट में 30 MGD प्रोडक्शन कम हुआ है। दिल्ली जल बोर्ड में स्टाफ की कमी का मुद्दा भी उन्होंने एलजी के सामने उठाया है। हिमाचल से हरियाणा के जरिए दिल्ली में पानी अभी आना शुरू नहीं हुआ है। दिल्ली में पीने के पानी और घरेलू पानी उपयोग की कमी है। आतिशी ने कहा कि हरियाणा सरकार के सामने हाथ जोड़कर खड़े हैं कि पानी दें।

AAP प्रवक्ता ने भाजपा पर साधा निशाना

आम आदमी पार्टी की मुख्य प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ ने पत्रकार वार्ता कर कहा कि भाजपा की हरियाणा सरकार न खुद दिल्ली को उसके हिस्से का पूरा पानी दे रही है और न अन्य राज्य को देने दे रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि हिमाचल प्रदेश से दिल्ली को मिलने वाला 137 क्यूसेक पानी भी हरियाणा ने रोक लिया है।

यही नहीं, मुनक कैनाल के जरिये दिल्ली के हिस्से के 1050 क्यूसेक पानी में भी 200 क्यूसेक की कटौती की जा रही है। कक्कड़ ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश का भी पालन नहीं हो रहा, दिल्ली के एलजी जनता का नहीं बल्कि भाजपा के हितों का ध्यान रखते हैं।

नीट परीक्षा में अनियमितताओं को लेकर एसआईओ ने किया सुप्रीम कोर्ट का रुख़, दोबारा परीक्षा कराए जाने की मांग

शम्स आगाज़

नई दिल्ली: स्टूडेंट्स इस्लामिक ऑर्गेनाइज़ेशन ऑफ़ इंडिया (SIO) ने सोमवार को प्रेस क्लब ऑफ़ इंडिया में NEET (UG) 2024 परीक्षा की प्रक्रिया में सामने आई अनियमितताओं को संबोधित करते हुए एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस संबंध में एसआईओ ने सर्वोच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका भी दायर की है, जिसमें NEET परीक्षा दोबारा कराए जाने और राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (NTA) द्वारा आयोजित पूरी प्रक्रिया की SIT जांच की मांग की गई है।

एसआईओ के राष्ट्रीय सचिव डॉ. रोशन मोहिद्दीन ने NTA की कार्यशैली और नोटिफ़िकेशन जारी होने के बाद से ही एक-के-बाद-एक होने वाली घटनाओं के बारे में चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि 15 दिन की मोहलत दिए जाने के बाद भी 9 अप्रैल को रजिस्ट्रेशन पोर्टल अचानक फिर से खोलना इसमें अनियमितताओं को दर्शाता है। इसके अलावा, बिहार में पेपर लीक और गुजरात और नोएडा में कदाचार की हालिया घटनाओं के परिणामस्वरूप गिरफ़्तारियों ने इस परीक्षा में निष्पक्षता और गोपनीयता पर भरोसा कम करने का काम किया है।

इसके अलावा, ग्रेस अंकों का आवंटन पारदर्शिता और जवाबदेही के बारे में गंभीर सवाल खड़े करता है। हालांकि NTA ने 'समय की हानि' के लिए ये अंक देने का दावा किया है लेकिन वे इस 'समय की हानि' को निर्धारित करने के लिए किसी मानदंड और कार्यप्रणाली को दस्तावेज़ित या पारदर्शी रूप से बताने में विफल रहे। इसके अलावा, विवरणिका में कोई जानकारी दिए बिना ही ट्विटर पर उनके द्वारा CLAT परीक्षाओं के बारे में 2018 के सुप्रीम कोर्ट के फ़ैसले का हवाला देना पूरी प्रक्रिया को लेकर संदेह बढ़ाने का काम करता है। यह बाद में दिया गया औचित्य परीक्षा प्रक्रिया में महत्वपूर्ण त्रुटियों या हेरफेर को छिपाने का एक प्रयास मात्र प्रतीत होता है। -20 से लेकर 720 तक के ग्रेस मार्क्स के आवंटन के पीछे का तर्क अस्पष्ट है। बिना किसी पूर्व सूचना के 1,600 उम्मीदवारों के लिए ग्रेस मार्क्स आवंटन को लेकर NTA की लापरवाही इसकी संदिग्ध मंशा को ज़ाहिर करती है। इसके अलावा, सदस्यों की पहचान का ख़ुलासा किए बिना एक उच्च स्तरीय समिति का गठन निष्पक्षता और ईमानदारी के बारे में गंभीर प्रश्न खड़े करता है।

एसआईओ के राष्ट्रीय सचिव अब्दुल्लाह फ़ैज़ ने इस वर्ष सामान्य श्रेणी के छात्रों के लिए काफ़ी कम योग्यता स्कोर पर बात की। उन्होंने इस तथ्य पर भी ज़ोर दिया कि ऐसी रिपोर्टें सामने आई हैं, जिनमें यह चौंकाने वाला बात है कि कई छात्रों को पूर्ण अंक मिले हैं और टॉप 67 विद्यार्थियों में से आठ विद्यार्थी हरियाणा के एक ही परीक्षा केंद्र से हैं। एक ही केंद्र में टॉपर्स की यह असंगत मौजूदगी परीक्षा प्रक्रिया की पारदर्शिता और निष्पक्षता पर गंभीर संदेह पैदा करती है।

इसके अलावा, उन्होंने पूरी प्रक्रिया के दौरान छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव पर भी ज़ोर दिया। हाल ही में परिणाम जारी होने के बाद एक छात्रा की आत्महत्या ने अभ्यर्थियों की पीड़ा को और भी दुखद रूप से उजागर किया है। उन्होंने यह भी पुष्टि की कि एसआईओ प्रभावित छात्रों और उनके परिवारों के साथ एकजुटता में खड़ी है क्योंकि वे न्याय और इन महत्वपूर्ण मुद्दों का समाधान चाहते हैं।

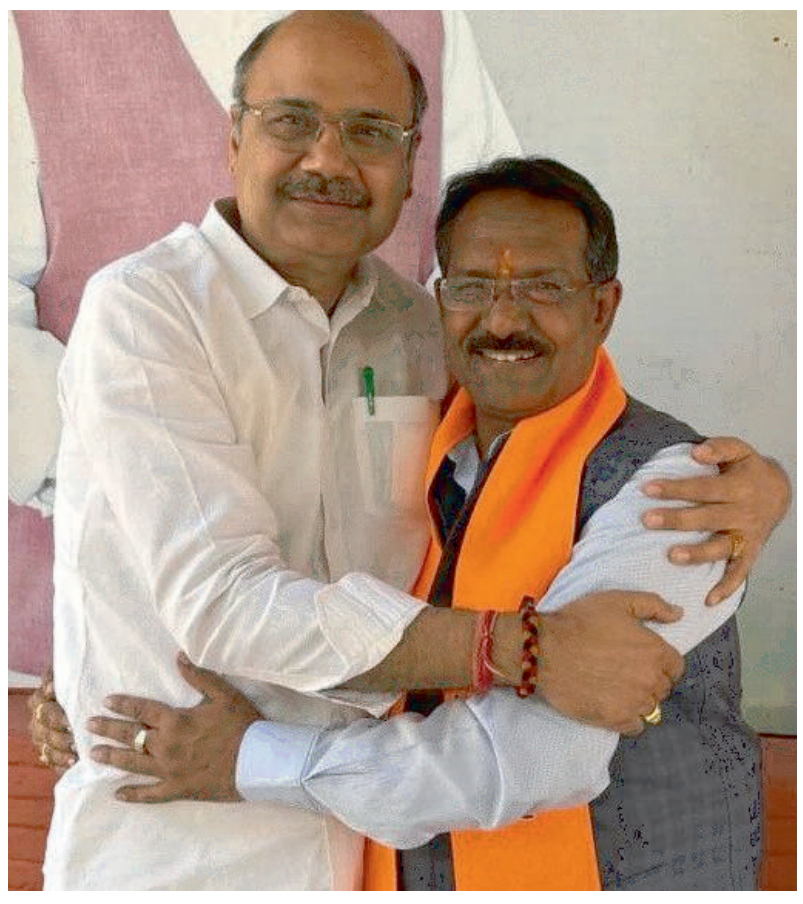

भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं पूर्वी दिल्ली संसदीय क्षेत्र से सांसद मेरे प्रिय मित्र बड़े भाई श्री हर्ष मल्होत्रा जी को मोदी सरकार में केंद्रीय राज्य मंत्री बनने पर हार्दिक शुभकामनाएं बधाई । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं आपको जीवन में इससे भी बढ़कर मान सम्मान एवं उत्तम स्वास्थ्य दें-राजेश भाटिया ।

यूपी की वो दो सीट' जहां सभी विधानसभाओं में भाजपा का सूपड़ा साफ! अपने इलाके में भी जीत नहीं दिला पाए बड़े-बड़े सूरमा

आजमगढ़ लोकसभा और लालगंज विधानसभा सीट की यूं तो सभी विधानसभाओं में भाजपा का सूपड़ा साफ हो गया है लेकिन हैरत यह कि उसके बड़े-बड़े सूरमा भी अपने यहां के बूथ नहीं जिता सके हैं। जेल में बंद बाहुबली रमाकांत यादव के बूथ तक पर भाजपा की दुर्गति हुई। भाजपा के क्षेत्रीय अध्यक्ष सहजानंद राय और जिला अध्यक्ष सूरज प्रकाश श्रीवास्तव तक अपना बूथ हार गए।

आजमगढ़। आजमगढ़ लोकसभा और लालगंज विधानसभा सीट की यूं तो सभी विधानसभाओं में भाजपा का सूपड़ा साफ हो गया है, लेकिन हैरत यह कि उसके बड़े-बड़े सूरमा भी अपने यहां के बूथ नहीं जिता सके हैं।

जेल में बंद बाहुबली रमाकांत यादव के बूथ तक पर भाजपा की दुर्गति हुई। भाजपा के क्षेत्रीय अध्यक्ष सहजानंद राय और जिला अध्यक्ष सूरज प्रकाश श्रीवास्तव तक अपना बूथ हार गए।

भाजपा खेमे में अभी भी मायूसी

हार होने से भाजपा खेमे में अभी भी मायूसी छाई हुई है। बीजेपी के प्रत्याशी तो घर से बाहर जनता के बीच भी नहीं जा रहे हैं। आजमगढ़ सीट पर सपा के धर्मेंद्र यादव ने अखिलेश यादव के बाद दूसरी सबसे बड़ी एक लाख 61 हजार वोटों से जीत दर्ज कर डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के जीत के मंत्र को ग्रहण करने वाले बीजेपी के सोशल मीडिया वालंटियरों की भी हैरानी बढ़ा दी है। बूथवार जीतने की रणनीति के बाद भी लोकसभा चुनाव की घोषणा के पहले से ही बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष से लेकर योगी सरकार के मंत्री कार्यकर्ताओं का सम्मेलन कर हर बूथ को जीतने का मंत्र देने में जुट गए थे।

डिप्टी सीएम ने दिया था जीत का मंत्र

डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य तो बीजेपी सोशल मीडिया वालंटियरों में भी चुनाव के बीच जीत का मंत्र जोश भर गए थे। इसके बाद भी मतदान के दिन दोनों लोकसभा में सब कुछ हवा हवाई साबित हो गया।

लालगंज लोकसभा के फूलपुर पवई विधानसभा के सपा के विधायक रमाकांत यादव जेल में बंद रहने के बाद भी अपने गांव के बूथ पर बीजेपी को हराने में कामयाब हो गए। इस बूथ पर सपा को 330 वोट मिले, जबकि भाजपा को 168 और बसपा को मात्र 10 वोट ही मिल पाया।

शराब पीकर वाहन चलाने पर 13 वाहनों का चालान, 7 को किया गया सीज....

सड़क हादसे में कमी के लिए नोएडा ट्रैफिक पुलिस की ओर से अभियान चलाकर कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में शनिवार को रात आठ से साढ़े 10 बजे तक ट्रैफिक पुलिस की ओर से शराब पीकर वाहन चलाने वालों के खिलाफ कार्रवाई की गई। ढाई घंटे तक 15 टीमों द्वारा विभिन्न स्थानों पर चेकिंग की गई।

नोएडा। ट्रैफिक पुलिस की ओर से शराब पीकर वाहन चलाने वालों के खिलाफ शनिवार रात अभियान चलाया गया है। शहर के प्रमुख चौराहों बार के आसपास चले अभियान के दौरान नियमों का उल्लंघन करने वाले 865 वाहन की जांच की गई। 12 वाहनों का चालान और सात वाहन सीज किए गए।

सड़क हादसे में कमी के लिए नोएडा ट्रैफिक पुलिस की ओर से अभियान चलाकर कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में शनिवार को रात आठ से साढ़े 10 बजे तक ट्रैफिक पुलिस की ओर से शराब पीकर वाहन चलाने वालों के खिलाफ कार्रवाई की गई। ढाई घंटे तक 15 टीमों द्वारा विभिन्न स्थानों पर चेकिंग की गई।

जीआइपी शापिंग माल, गार्डन गलेरिया, सेक्टर-15 ए गोल चक्कर, सेक्टर-37 चौक, सेक्टर-62 माडल टाउन, सेक्टर-79 चौक, महर्षि आश्रम चौक, सेक्टर-104 हाजीपुर चौक-स्काई मार्क माल, गौर सिटी माल-इटेहडा गोल चक्कर, सूरजपुर चौक, परी चौक, कस्बा दादरी, जेवर टोल प्लाजा के पास अभियान चलाकर कार्रवाई की गई। मौके पर यातायात निरीक्षक (टीआइ) के साथ यातायात उप निरीक्षक (टीएसआइ), हेड कांस्टेबल, कांस्टेबल मौजूद रहे।

30 मिलीग्राम से ज्यादा से शराब का सेवन करने वालों का कटा चालान

सभी टीआइ ने बाडी वार्न कैमरे का प्रयोग किया। अभियान के दौरान वाहनों का चालान करने के साथ उन्हें सीज किया गया। ब्रेथ एनालाइजर से जांच के 30 मिलीग्राम से ज्यादा से शराब का सेवन कर वाहन चला रहे चालकों का चालान किया गया। वाहन पर उनके साथ मौजूद दूसरे व्यक्ति को वाहन चलाकर शराब पीने वाले चालक को साथ ले जाकर उसके घर तक सही सलामत छोड़ने के लिए निर्देशित किया।

ऐसे चालक जिनके साथ दूसरा चालक नहीं था और वाहन के सभी जरूरी कागजात भी नहीं थे। उनके वाहन को सीज कर दिया गया है। ऐसे वाहनों को सीज वाहन को सेक्टर-62 स्थित खाने भेजा गया है।

डीसीपी ट्रैफिक अनिल यादव का कहना है कि मोटर वाहन अधिनियम-2019 की धारा 185 के अनुसार शराब पीकर गाड़ी चलाना गैरकानूनी है। यह एक आपराधिक कृत्य है। पकड़े जाने पर शराब पीकर गाड़ी चलाने का जुर्माना 10 हजार रुपये का जुर्माना लगाया जाता है। दूसरी बार यही शराब पीकर वाहन चलाते हुए पकड़े जाने पर व्यक्ति को 2 साल तक की जेल और 15 हजार तक का चालान भरना पड़ सकता है।

ग्रेटर नोएडा: मास्टर प्लान 2041 के सेक्टरों का होगा विकास, बड़ी निर्माण कंपनियों की मदद लेगा YEIDA

यमुना प्राधिकरण सेक्टरों के विकास में छोटे-छोटे ठेकेदरों की बजाए निर्माण क्षेत्र की बड़ी कंपनियों की मदद लेगा। निर्माण कार्य की गुणवत्ता बेहतर करने व कार्यों से तेज गति से पूरा करने के लिए प्राधिकरण ने यह फैसला लिया है। मास्टर प्लान 2041 में नियोजित सेक्टरों के विकास में प्राधिकरण इसे लागू करेगा। निविदा के माध्यम से कंपनियों का चयन किया जाएगा।

ग्रेटर नोएडा। यमुना प्राधिकरण सेक्टरों के विकास में छोटे-छोटे ठेकेदरों की बजाए निर्माण क्षेत्र की बड़ी कंपनियों की मदद लेगा। निर्माण कार्य की गुणवत्ता बेहतर करने व कार्यों से तेज गति से पूरा करने के लिए प्राधिकरण ने यह फैसला लिया है। मास्टर प्लान 2041 में नियोजित सेक्टरों के विकास में प्राधिकरण इसे लागू करेगा। निविदा के माध्यम से कंपनियों का चयन किया जाएगा।

निविदा के जरिये होता है कंपनी का चयन

यमुना प्राधिकरण आवासीय, संस्थागत, औद्योगिक समेत सभी श्रेणी के सेक्टरों के विकास में अभी तक अलग-अलग कार्यों के लिए अलग-अलग ठेकेदार कंपनियों का निविदा के जरिये चयन करता है, लेकिन ठेकेदारों के बीच समन्वय की कमी और सीमित संसाधनों की वजह से सेक्टरों का विकास गुणवत्ता व समयबद्ध तरीके से नहीं रहा है।

सड़क, सीवर, नाली, पेयजल पाइप लाइन, बिजली नेटवर्क आदि को लेकर आए दिन शिकायतें आती हैं। निर्माण कार्यों में कमिशन आदि को लेकर भी प्राधिकरण कर्मचारियों पर आरोप लगते हैं। निर्माण की गुणवत्ता ठीक न होने से कुछ ही समय में मरम्मत की जरूरत पड़ने लगती है।

बड़ी कंपनियां करेंगी विकास कार्य

इस सिरदर्दी से छुटकारा पाने के लिए प्राधिकरण ने निर्माण क्षेत्र की बड़ी कंपनियों से सेक्टरों के विकास कार्य कराने का फैसला किया है। चयनित कंपनी की सेक्टर में सड़क, सीवर, नाली, पेयजल पाइप लाइन, बिजली, इंटरनेट आदि के केवल आदि का काम करेगी।

भविष्य की जरूरत को देखते हुए केवल आदि के लिए अलग वाहिका डक्ट डाली जाएंगी। इससे सेक्टर में बार-बार खोदाई की जरूरत नहीं पड़ेगी। सीईओ डा. अरुणवीर सिंह का कहना है कि निर्माण क्षेत्र की कंपनियों से सेक्टर के विकास कार्यों को कराने के कई फायदे होंगे। कार्य की गुणवत्ता व समय बद्धता बनी रहेगी। समन्वय आदि को लेकर आदि वाली परेशानी समाप्त होगी।

ठेकेदारों के बीच में काम छोड़ने या निर्माण लागत बढ़ाने को लेकर आदि वाले समस्याएं समाप्त होंगी। भ्रष्टाचार के आरोप से छुटकारा मिलेगा। चयनित कंपनी की ढांचागत निर्माण की पांच वर्ष तक मेंटेनेंस का काम देखेगी। मास्टर प्लान 2041 में शामिल सेक्टरों के विकास के लिए निर्माण कंपनियों की मदद ली जाएगी।

नोएडा में 3 घंटे डिजिटल अरेस्ट कर इंजीनियर से 9.95 लाख रुपये ठगे, आप ना करें ऐसी गलती

जिले में एक बार फिर डिजिटल अरेस्ट कर ठगी का मामला सामने आया है। ग्रेटर नोएडा में रहने वाले एक इंजीनियर को तीन घंटे डिजिटल अरेस्ट कर 9.95 लाख रुपये ठग लिए। कानूनी कार्रवाई से बचने के लिए पीड़ित ने करीब 10 बार में साइबर अपराधियों के विभिन्न बैंक खातों में धनराशि ट्रांसफर कर दी। एफआइआर में बताया कि वह एक नामी कंपनी में इंजीनियर हैं।

नोएडा। जिले में एक बार फिर डिजिटल अरेस्ट कर ठगी का मामला सामने आया है। ग्रेटर नोएडा में रहने वाले एक इंजीनियर को तीन घंटे डिजिटल अरेस्ट कर 9.95 लाख रुपये ठग लिए। कानूनी कार्रवाई से बचने के लिए पीड़ित ने करीब 10 बार में साइबर अपराधियों के विभिन्न बैंक खातों में धनराशि ट्रांसफर कर दी। साइबर अपराध थाना पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

खुद को कोरियर कंपनी का कर्मचारी बताया

ग्रेटर नोएडा के सौम्यकांत प्रस्टी ने दर्ज कराई एफआइआर में बताया कि वह एक नामी कंपनी में इंजीनियर हैं। 7 जून की सुबह करीब 11 बजकर 52 मिनट पर उनके पास अनजान नंबर से कॉल आई। कॉल करने वाले ने खुद को नामी कोरियर कंपनी फेडेक्स का कर्मचारी बताया।

उसने कहा कि उनके आधार कार्ड का इस्तेमाल ईरान भेजे जाने वाले एक पार्सल में हुआ है। पार्सल में ड्रग्स समेत अन्य प्रकार का प्रतिबंधित सामान है। नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो की शिकायत पर उनके शिपमेंट को रोक दिया गया है। इसके बाद कॉल को एनसीबी और मुंबई साइबर सेल के कथित अधिकारियों के पास ट्रांसफर किया गया।

जालसाजों ने पुलिसकर्मी बनकर पीड़ित को ठगा

जालसाजों ने पुलिसकर्मी बनकर पीड़ित को करीब तीन घंटे तक डिजिटल अरेस्ट रखा। इस दौरान किसी से बात नहीं करने दी। पीड़ित से ठगों ने बैंक और क्रेडिट कार्ड संबंधी जानकारी हासिल कर एक प्राइवेट बैंक से दस लाख रुपये का इंस्टेंट लोन करा लिया।

लोन की रकम से ही पैसे ट्रांसफर किए गए। नौ बार में एक-एक लाख रुपये, जबकि एक बार में 95 हजार रुपये ट्रांसफर हुए। इस दौरान ठगों ने अपनी आइडी भी भेजी ताकि शिकायतकर्ता को विश्वास हो जाए कि वह एनसीबी और मुंबई साइबर सेल के अधिकारी हैं।

जब शिकायतकर्ता ने अपनी ईमेल आइडी चेक की तो उसे पता चला कि उसके क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल कर दस लाख रुपये का लोन कराया गया है। पैसे वापस मांगने पर ठगों ने पीड़ित से संपर्क तोड़ दिया। बाद में जानकारी हुई कि ठगों ने जो आइडी भेजी थी वह फर्जी थी।

साइबर अपराध थाना प्रभारी निरीक्षक उमेश कुमार नैथानी का कहना है कि मुकदमा दर्ज कर जांच की जा रही है। उन खातों की जांच करनी शुरू कर दी है जिन खातों में ठगी की रकम ट्रांसफर हुई है। जांच के बाद कार्रवाई की जाएगी।

पुलिस या कोई भी केंद्रीय जांच एजेंसी नहीं करती डिजिटल अरेस्ट

साइबर सेल के एसीपी विवेक रंजन राय का कहना है कि किसी भी राज्य की पुलिस या केंद्रीय जांच एजेंसियां कभी भी डिजिटल अरेस्ट नहीं करती हैं। जब भी कोई व्यक्ति खुद को पुलिस अधिकारी बताकर बात करे और कार्रवाई से बचने के लिए फोन कॉल करके खाते में धनराशि मांगता है तो समझ जाएं कि वह साइबर अपराधी हैं। धनराशि ट्रांसफर करने से पहले परिवार के किसी सदस्य, दोस्त या फिर नजदीकी पुलिस स्टेशन के अधिकारी से संपर्क जरूर करें। इस तरह की ठगी से बचने के लिए यही एकमात्र उपाय है।

ये सावधानी बरतें

किसी भी कंपनी का कस्टमर केयर नंबर उसकी आधिकारिक वेबसाइट से लें।

जिन वेबसाइट पर लालरंग का निशान दिखाई दे, उनका एक्सेस करने से बचें।

यूट्यूब पर जारी किए गए वीडियो में दिए मोबाइल-फोन नंबर पर कॉल न करें।

वीडियो और वेब पेज को लाइक करने पर मोटी कमाई होने के झांसे में न आएं।

सरकारी विभाग के नाम से अगर कोई कॉल आए तो भुगतान नहीं करें।

मध्यप्रदेश में खास रही 'स्त्री शक्ति' की भूमिका, लोकसभा की सभी सीटें जीतकर भाजपा ने रचा इतिहास

प्रो. संजय द्विवेदी

संघ की प्रयोगभूमि होने के कारण मध्यप्रदेश पर पूरे देश की निगाह थी। मध्यप्रदेश में यह वैचारिक यात्रा हिंदुत्व, भारतबोध की यात्रा तो है ही समाज के सभी वर्गों की हिस्सेदारी ने इसे सफल बनाया है। स्त्री शक्ति इसमें सबसे प्रमुख है।

मध्यप्रदेश में सभी लोकसभा सीटों पर विजय प्राप्त कर भाजपा ने कठिन समय में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को बड़ा सहारा दिया है। जिसमें मध्यप्रदेश की महिला मतदाताओं का योगदान सबसे महत्वपूर्ण है। विधानसभा चुनाव अभियान से ही प्रधानमंत्री मोदी मध्यप्रदेश में सबसे खास चेहरा बने हुए हैं। मध्यप्रदेश विधानसभा चुनावों में भाजपा ने मोदी के चेहरे पर ही चुनाव लड़ा था और भारी जनसमर्थन प्राप्त किया। 'मोदी के मन में मध्यप्रदेश, मध्यप्रदेश के मन में मोदी' यह मुख्य नारा था, जिसमें संगठन के परिश्रम ने प्राण फूंक दिए।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सत्ता में तीसरी बार वापसी एक असाधारण घटना है। भारत जैसे जीवंत लोकतंत्र में अपनी लोकप्रियता और प्रासंगिकता बनाए रखना इतना आसान नहीं होता। भाजपा जैसे दल के लिए जिसने 8 वें दशक में सिर्फ दो लोकसभा सीटों के साथ अपनी यात्रा प्रारंभ की हो, यह चमत्कार ही है। अनपेक्षित परिणामों के बाद भी केंद्र में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी और एनडीए सबसे बड़ा गठबंधन है। मध्यप्रदेश वैसे भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा के अद्भुत समन्वय से चलने वाला राज्य रहा है। मुख्यमंत्री मोहन यादव, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा, पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, संगठन मंत्री हितानंद शर्मा, ज्योतिरादित्य सिंधिया जैसे दिग्गजों की जुगलबंदी ने जो इतिहास रचा है, उसे लंबे समय तक याद किया जाएगा। इसके अलावा नरेंद्र सिंह तोमर, कैलाश विजयवर्गीय, प्रहलाद पटेल, राजेन्द्र शुक्ल, फग्गन सिंह कुलस्ते, वीरेंद्र कुमार जैसे अनेक नेता भाजपा के सामाजिक और भौगोलिक विस्तार को स्थापित करते हैं।

संघ की प्रयोगभूमि होने के कारण मध्यप्रदेश पर पूरे देश की निगाह थी। मध्यप्रदेश में यह वैचारिक यात्रा हिंदुत्व, भारतबोध की यात्रा तो है ही समाज के सभी वर्गों की हिस्सेदारी ने इसे सफल बनाया है। स्त्री शक्ति इसमें सबसे प्रमुख है। पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने जहां स्त्री शक्ति को भाजपा के साथ गोलबंद करने में अहम भूमिका निभाई, वहीं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सत्ता में आते ही सामान्य जन के जीवन स्तर को उठाने के प्रयास किए। विभिन्न योजनाओं के माध्यम से गरीब परिवारों को संबल दिया, जिस बदलाव को स्त्री शक्ति ने महसूस किया। स्त्री भारतीय परिवारों की धुरी है। भारतीय राजनीति में स्त्री को इस तरह से केंद्र में रखकर कभी विचार नहीं किया गया। यह बात रेखांकित करना चाहिए कि आखिर देश की राजनीति में स्त्री के सवाल हाशिए पर क्यों रहे हैं? स्त्री आखिर चाहती क्या है? वह चाहती है सुखद, सुरक्षित, आनंदमय जीवन और अपने बच्चों का सुनहरा भविष्य। एक अदद छत जिसमें वह अपने परिवार के साथ चैन से रह सके।

नरेंद्र मोदी ने सामान्य भारतीय स्त्री के इस मन और जीवन की समस्याओं को संबोधित किया। स्त्री को सुरक्षित परिवेश और बेटियों को आसमान छूने की प्रेरणा दी। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ सिर्फ नारा नहीं एक सामाजिक संकल्प बन गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बहुत सामान्य परिस्थितियों से आगे बढ़े हैं। वे परिवारों को चलाने वाली स्त्री के दर्द, उसकी जरूरतों को समझने वाले राजनेता हैं। उज्जवला गैस जैसे योजना उनके संवेदनशील मन की गवाही देती है। लकड़ियां लेटर आने, गोबर के उपलों से खाना बनाती स्त्री, उसके कष्ट सब नहीं समझ सकते। धुएं के नाते उसको होने वाले स्वास्थ्यगत नुकसान को भी सब नहीं समझ सकते। बात छोटी है, पर संवेदना बहुत बड़ी। इसी तरह शौचालय न होने के कारण स्त्री के कष्ट से हर घर शौचालय का विचार एक क्रांतिकारी कदम था। यह मुद्दा महिला सुरक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता सबसे जुड़ा हुआ मुद्दा है। मध्यप्रदेश ने केंद्र की सभी योजनाओं का श्रेष्ठ क्रियान्वयन किया। इस पहल ने देश और प्रदेश में परिवर्तन का सूत्रपात किया। प्रधानमंत्री आवास योजना इसी दिशा में उठाया गया एक ऐसा कदम था, जिसने परिवार को छत दी। आप लाख कहें महिला के लिए उसके घर से बड़ी कोई चीज नहीं होती। यह बहुत भावनात्मक विषय है, जो सामान्य मन से समझ में नहीं आएगा। कोरोना संकट में देश और उसके नागरिकों की अभिभावक की तरह चिंता करके प्रधानमंत्री ने लोगों के मन में जगह बना ली। वैक्सीन से लेकर 80 करोड़ परिवारों को राशन ने स्त्रियों के मन में सरकार के प्रति भरोसा जगाया।

स्त्री कल्याण की योजनाएं मध्यप्रदेश में शिवराज सिंह चौहान को 'मामा' के रूप में स्थापित कर गयीं। शिवराज जी मध्यप्रदेश में इसी लोकप्रियता के कारण अपनी सीट आठ लाख से ज्यादा मतों से जीते और मध्य प्रदेश में सबसे बड़ी सफलता मिली। भाजपा मध्यप्रदेश की सरकार सामाजिक कल्याण की योजनाएं और केंद्र की योजनाओं ने कमाल किया। भरोसा पैदा किया। मोदी ने 2014 में सत्ता में आते ही अपनी सरकार को गरीबों के कल्याण के समर्पित होने की 'घोषणा' की थी। यह घोषणा बाद के 10 सालों में 'संकल्प' सरीखी नजर आई। भरोसा जगाते हुए मोदी देश के दिल में उतरते चले गए। मध्यप्रदेश में नरेंद्र मोदी के प्रति गहरा प्रेम और सम्मान तब भी प्रकट हुआ, जब विधानसभा चुनावों में भाजपा ने अभूतपूर्व जनादेश प्राप्त किया। इसके लिए पीएम ने सार्वजनिक मंच पर प्रदेश अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा की पीठ भी ठोंकी। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने साफ कहा कि महिला कल्याण की कोई योजना बंद नहीं होगी। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी भी लालड़ी बहना योजना को चुनावों में प्रभावित करने वाला बताते हैं।

संसद और विधानसभाओं के लिए महिला आरक्षण बिल पास करवाना भी केंद्र सरकार की बहुत बड़ी उपलब्धि रही। लंबे समय से लंबित यह बिल अनेक सरकारों के प्रयास के बाद भी पास नहीं हो सका था। मोदी सरकार की स्त्री मुद्दों पर प्रतिबद्धता भी इससे जाहिर हुई। साथ ही इस संसदीय चुनाव में देश में भाजपा ने 69 महिलाओं को टिकट दिया। कांग्रेस ने 41 महिला प्रत्याशी उतारे। संकेत और संदर्भ राजनीति को प्रभावित करते हैं। ऐसे में भाजपा की ओर स्त्री शक्ति का आकर्षण सहज ही है। आंकड़े बताते हैं कि हर वर्ग की महिलाओं में भाजपा की लोकप्रियता किसी अन्य दल से ज्यादा है। मोदी वैसे भी सामान्य रूप से सभी वर्गों के आकर्षण के केंद्र हैं। महिलाओं और युवाओं में उनकी लोकप्रियता बहुत है। सही मायनों में भारतीय लोकतंत्र में बढ़ती महिलाओं की हिस्सेदारी और उनका वोट प्रतिशत बड़े बदलाव का सूचक है। राष्ट्रपति के रूप में श्रीमती द्रोपदी मुर्मू के चुनाव ने राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं को प्रेरित किया। नरेंद्र मोदी ने 'आकांक्षावान भारत' की उम्मीदों को पंख लगा दिए हैं। अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य को लेकर महिलाएं सदैव चिंतित रहती हैं। अपने विकास केंद्रित विजन से मोदी सरकार भविष्य के आत्मविश्वासी भारत की नींव रख चुकी है। भरोसा यहीं से आता है। महिलाएं जानती हैं यह मोदी की गारंटी है, पूरी होनी चाहिए। स्त्री शक्ति के इस सहयोग और आशीर्वाद के बाद मोदी सरकार की जिम्मेदारियां बहुत बढ़ गई हैं, देखना है केंद्र सरकार आने वाले समय में इन प्रश्नों को किस तरह संबोधित करती है। फिलहाल तो देश की जनता और स्त्री शक्ति के जनादेश से सत्ता में आई एनडीए सरकार को शुभकामनाएं ही दी जा सकती हैं।

मध्यप्रदेश ने साबित किया है कि सत्ता और संगठन में समन्वय से ही अच्छे परिणाम पाए जा सकते हैं। महिलाओं को अपने साथ गोलबंद कर भाजपा ने अपना आधार मध्यप्रदेश में बहुत मजबूत कर लिया है। महिला आरक्षण बिल के बाद निश्चित ही आने वाले समय में राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए महिलाओं को आगे आना ही होगा। ऐसे में मध्यप्रदेश में होने वाले संगठनात्मक प्रयोग अन्य राज्यों के लिए भी सबक होंगे।

-प्रो. संजय द्विवेदी

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और स्तंभकार हैं)

टॉल पर टैक्स देने के लिए नहीं करना होगा इंतजार, फास्टटैग के साथ नई तकनीक से जल्द कटेगा पैसा

परिवहन विशेष न्यूज

भारत में बड़ी संख्या में एक्सप्रेस वे और नेशनल हाइवे बन रहे हैं। जिस कारण वाहनों की संख्या भी लगातार बढ़ रही है। कई बार Toll पर Tax देने के लिए लंबी लाइन लग जाती हैं। जिससे समय खराब होता है। लेकिन जल्द ही नई तकनी के जरिए Fastag से पैसा लिया जाएगा। यह तकनीक क्या है और इससे क्या फायदा मिलेगा। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में बड़ी संख्या में हाइवे, एक्सप्रेस वे शुरू होने से वाहनों की संख्या में भी बढ़ोतरी हो रही है। जिससे अक्सर Toll पर Tax देने में समय लगता है। इस समस्या को सुलझाने के लिए एनएचएआई और आईएचएमसीएल जल्द ही नई तकनीक को शुरू करने की तैयारी कर रहे हैं। हम इस खबर में आपको बता रहे हैं कि किस तरह से नई तकनीक के जरिए Fastag से पैसा दिया जाएगा और इससे क्या फायदे होंगे।

क्या है नई तकनीक

टोल प्लाजा पर अक्सर Toll Tax देने में कई वाहनों को समय लगता है। जिससे लाइन बढ़ती जाती है। लेकिन इस परेशानी को खत्म करने के लिए एनएचएआई और आईएचएमसीएल जल्द ही नई तकनीक को शुरू करने की तैयारी कर रहे हैं। जिससे टोल टैक्स देने में किसी भी वाहन को खड़ा नहीं होना पड़ेगा। इस तकनीक को GNSS यानि कि ग्लोबल नेविगेशन सेटेलाइट सिस्टम कहा जाता है।

कैसे करेगी काम

एनएचएआई मौजूदा Fastag इकोसिस्टम के अंदर ही GNSS-आधारित इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह (ETC) सिस्टम को शुरू करने की योजना बना रहा है। शुरूआत में एक हाइब्रिड मॉडल का उपयोग करके RFID-आधारित ईटीसी और जीएनएसएस-आधारित ईटीसी दोनों एक साथ काम करेंगे। टोल प्लाजा पर जीएनएसएस लेन को शुरू किया जाएगा, जिससे जीएनएसएस-आधारित ईटीसी का उपयोग करने वाले वाहन आसानी से गुजर सकेंगे।

क्या होंगे फायदे

भारत में Fastag के साथ ही GNSS सिस्टम को एक बार शुरू कर दिया जाएगा तो उसके बाद सबसे ज्यादा फायदा वाहनों को होगा। टोल देने के लिए लगने वाले समय को काफी कर दिया जाएगा और इसके अलावा जो कार जितनी दूरी तय करेगी उसे उतना ही Tax टोल पर देना होगा। आम जनता के साथ ही इसका फायदा यह भी होगा कि इससे ज्यादा बेहतर तरीके से टोल संग्रह किया जा सकेगा। साथ ही इससे लीकेज रोकने और टोल चोरी करने जैसी समस्याओं से भी निजात मिल पाएगी।

इस तरह होगी शुरूआत

GNSS आधारित टोल सिस्टम को सबसे पहले दो हजार किलोमीटर पर तीन महीने में लागू किया जाएगा। इसके बाद नौ महीनों के दौरान इसे 10 हजार किलोमीटर तक बढ़ाया जाएगा और फिर 15 महीनों में इसे बढ़ाकर 50 हजार किलोमीटर तक कर दिया जाएगा। इसके लिए सरकार की ओर से आवेदन मांगे गए हैं। एनएचएआई और आईएचएमसीएल की ओर से इस सिस्टम को लागू करने के लिए 22 जुलाई तक Global Expression of Interest को मंगवाया है।

मई 2024 में कैसी रही वाहनों की बिक्री, फाडा ने रिपोर्ट जारी कर दी जानकारी

फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (FADA) की ओर से रिपोर्ट जारी की गई है। जिसके मुताबिक May 2024 में ईयर ऑन ईयर बेसिस पर Vehicle Sales में बढ़ोतरी दर्ज की गई है। मंथली बेसिस पर कैसी बिक्री हुई है। फाडा की ओर से जारी रिपोर्ट के मुताबिक देशभर में किस सेगमेंट में कितने वाहनों की बिक्री हुई है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में लगातार ऑटो सेक्टर में मांग बढ़ रही है, लेकिन बीते महीने बिक्री के मामले में गिरावट दर्ज की गई है। May 2024 ईयर ऑन ईयर बेसिस पर तो बेहतर रहा लेकिन मंथली बेसिस पर बिक्री में हल्की गिरावट दर्ज की गई है। फाडा की ओर से जारी रिपोर्ट के मुताबिक देशभर में किस सेगमेंट में कितने वाहनों की बिक्री हुई है। हम इसकी जानकारी आपको इस खबर में दे रहे हैं।

कितनी हुई बिक्री

फाडा की ओर से जारी की गई रिपोर्ट के मुताबिक May 2024 के दौरान कुल 2089603 यूनिट्स वाहनों की बिक्री हुई है। जिसमें दो पहिया, तीन पहिया, निजी वाहन, कमर्शियल वाहनों के साथ ही ट्रैक्टर सेगमेंट के वाहन भी शामिल हैं। फाडा की रिपोर्ट के मुताबिक सबसे ज्यादा बिक्री दो पहिया वाहन सेगमेंट में हुई है। इसके बाद निजी वाहन सेगमेंट में सबसे ज्यादा बिक्री दर्ज की गई है।

किस सेगमेंट में कितनी बिक्री

फेडरेशन ऑफ ऑटोमबाइल डीलर्स एसोसिएशन (FADA) की रिपोर्ट के मुताबिक देशभर में 1534856 यूनिट्स दो पहिया वाहनों की बिक्री हुई है। इसके बाद निजी वाहनों की बिक्री 303358 यूनिट्स की रही है। तीन पहिया सेगमेंट में May 2024 के दौरान कुल 98265 यूनिट्स वाहनों की बिक्री हुई है। कमर्शियल वाहनों की बीते महीने में 83059 यूनिट्स बिक्री हुई। ट्रैक्टर सेगमेंट में 70065 यूनिट्स की बिक्री बीते महीने में हुई है।

किसका कैसा प्रदर्शन

फाडा की रिपोर्ट के मुताबिक ईयर ऑन ईयर बेसिस पर सबसे ज्यादा बढ़ोतरी तीन पहिया सेगमेंट में हुई है। जानकारी के मुताबिक इस सेगमेंट में 20.09 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। इसके बाद 4.07 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ कमर्शियल वाहन सेगमेंट रहा। दो पहिया वाहन सेगमेंट में ईयरली बेसिस पर 2.48 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है, लेकिन मंथली बेसिस पर इस सेगमेंट में 6.61 फीसदी की कमी आई है। निजी वाहन सेगमेंट में भी ईयर ऑन ईयर बेसिस पर 0.96 फीसदी की कमी दर्ज हुई है और मंथली बेसिस पर भी इस सेगमेंट में 9.48 फीसदी की कमी आई है। इसके बाद ट्रैक्टर सेगमेंट में ईयरली बेसिस पर 1.06 फीसदी की कमी दर्ज हुई, लेकिन मंथली बेसिस पर इस सेगमेंट में 23.74 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज हुई है।

कार को नहीं है इन एक्सेसरीज की जरूरत, पैसे बचाने के लिए जरूर जानें डिटेल

अगर आप इन दिनों अपनी पुरानी कार को नया बनाने का सोच रहे हैं और इसके लिए ऑफ्टरमार्केट से एक्सेसरीज खरीदने जा रहे हैं तो ठहर जाएं। हो सकता है आपको इन एक्सेसरीज की जरूरत ही न हो। जानिए क्या है डिटेल।

देश में जितनी तेजी से कारों का बाजार बढ़ रहा है, उतनी ही तेजी से एक्सेसरीज ऑफ्टरमार्केट भी ऊपर की ओर जा रही है। आज के समय में अधिकतर लोग अपनी पर्सनल मोबिलिटी के लिए कार पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं। यही वजह है कि अब ग्राहक नई कार खरीदने से पहले गाड़ी के फीचर्स के बारे में अधिक पूछ रहे हैं। साथ ही कार में मिलने वाले सुरक्षा फीचर्स के बारे में जानने को लेकर उत्सुक रहते हैं। अभी भी बाजार की हर नई कार में सभी एक्सेसरीज और फीचर्स नहीं मिलते हैं। ऐसे में ज्यादातर लोग ऑफ्टरमार्केट की ओर जाते हैं। ऐसे में अगर आप पैसों की बचत करने वाले ग्राहक हैं तो कार के लिए इन पांच एक्सेसरीज को न खरीदें, इसमें ही फायदा है।

सीट कवर्स

अक्सर देखा गया है कि लोग अपनी कार को सुंदर बनाने के लिए कई तरह के बदलाव करते हैं। इसके लिए सबसे पहले कार की सीट कवर खरीदते हैं। ऑफ्टरमार्केट से खरीदी जाने वाली इस एक्सेसरीज की जरूरत नहीं है। नई कार में जो कंपनी ने सीट कवर्स दिए हैं, वह आरामदायक सफर के लिए काफी होते हैं, इसलिए सीट कवर एक्सेसरीज पर पैसे न खर्चें।

टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम

आजकल की आने वाली कारों में टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम यानी टीपीएमएस फीचर मिलता है। हालांकि, कई पुरानी कारों में यह सुविधा नहीं दी जाती है। ऐसे में अगर आप ऑफ्टरमार्केट से इस एक्सेसरीज को खरीदने की सोच रहे हैं तो इसे खरीदने से बचें। कई बार देखा गया है कि टीपीएमएस ड्राइवर को गलत डेटा बताता है, जिसकी वजह से टायर में एयर प्रेशर ऊपर-नीचे रह जाता है। इसके पीछे की एक बड़ी वजह है कि ऑफ्टरमार्केट में बिकने वाली टीपीएमएस डिवाइस अधिकतर चीन द्वारा बनाई जाती है।

टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम

बाजार में आने वाली एडवांस कारों में आजकल टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम दिया जा रहा है। यह इंफोटेनमेंट सिस्टम एक साथ कई सारे काम कर लेता है। इसके जरिए ड्राइवर अंदर बैठे-बैठे बाहर का दृश्य देख लेता है। साथ ही यह नेविगेशन में भी मदद करता है और इस पर गाने भी सुने जा सकते हैं।

हालांकि, कार में अगर पुराना मोनो टोन के साथ सिंगल डिस्प्ले म्यूजिक सिस्टम है तो भी कोई परेशानी की बात नहीं है। इससे भी मनोरंजन का काम चल सकता है और ऑफ्टरमार्केट से महंगा टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम खरीदने की जरूरत नहीं है।

एलईडी डीआएल

ज्यादातर कारों में एलईडी डीआएल यानी डे टाइम रनिंग लाइट मिलती है। अगर आपकी कार में एलईडी डीआएल की सुविधा नहीं दी गई है तो इसके लिए ऑफ्टरमार्केट से अतिरिक्त खर्च करने की कोई जरूरत नहीं है। दरअसल, आपकी जानकारी के लिए बता दें कि ऑफ्टरमार्केट से एलईडी डीआएल लेकर गाड़ी पर लगाने से कोई फायदा नहीं है। यह सुविधा वाहन के लिए अधिक उपयोगी नहीं है। इस सुविधा का ज्यादा काम वहां पर होता है, जहां अधिकतर समय फॉगी मौसम रहता है।

एबियंट लाइटिंग

बाजार में आने वाली कारों में कई सुविधाएं मिल रही हैं, जिसमें एक एबियंट लाइटिंग। अगर आपकी कार में एबियंट लाइटिंग की सुविधा नहीं है और आप ऑफ्टरमार्केट से एबियंट लाइटिंग खरीदने की सोच रहे हैं तो ऐसा न करें। इस लाइटिंग से केवल कार के केबिन में रोशनी बढ़ती है और इसका कोई काम नहीं है। वहीं, एबियंट लाइटिंग कार में लगाने से वाहन की बैटरी पर ज्यादा प्रेशर पड़ता है।

खास फीचर के साथ लॉन्च हुआ यामाहा का फेसिनो एस स्कूटर, जानें कितनी है कीमत

जापानी दो पहिया वाहन निर्माता Yamaha भारतीय बाजार में कई बेहतरीन बाइक स और स्कूटर्स की बिक्री करती है। कंपनी की ओर से हाल में अपने Fascino S स्कूटर को एक खास फीचर के साथ लॉन्च किया है। कंपनी की ओर से किस फीचर के साथ स्कूटर को पेश किया गया है। इसे किस कीमत पर खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। यामाहा की ओर से भारतीय बाजार में Fascino S स्कूटर को बेहद खास फीचर के साथ लॉन्च किया गया है। कंपनी की ओर से इस स्कूटर को किस कीमत पर और किस खास फीचर के साथ लॉन्च किया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च हुआ Yamaha Fascino S स्कूटर

इंडिया यामाहा मोटर प्राइवेट लिमिटेड की ओर से भारतीय बाजार में द कॉल ऑफ द ब्लू अभियान के तहत एक खास फीचर के साथ फैसिनो एस मॉडल को लॉन्च किया है। फैसिनो एस स्कूटर स्टाइलिश यूरोपीय डिजाइन और बेहतरीन प्रदर्शन के साथ बाजार में उपलब्ध करवाया जाता है। इस स्कूटर को मैट रेड और मैट ब्लैक रंग के शेड्स के साथ-साथ डार्क मैट ब्लू रंग के विकल्प में उपलब्ध करवाया जाता है।

क्या है खास फीचर

यामाहा की ओर से जिस खास फीचर के साथ इस स्कूटर को लॉन्च किया गया है, वह आंसर बैक फीचर है। इस फीचर का उपयोग ग्राहक यामाहा के मोबाइल एप्लिकेशन यामाहा स्कूटर आंसर बैक में कर सकते हैं। एप्लिकेशन के अंदर आंसर बैक बटन दबाकर, सवार आसानी से अपने स्कूटर का पता लगा सकते हैं। यह करीब दो सेकेंड के लिए हॉर्न को बाएं और दाएं दोनों साइड से प्रतिक्रिया करता है, जिससे सवार को अपना स्कूटर ढूंढने में आसानी हो जाती है। एप्लिकेशन को गूगल प्ले स्टोर और एप स्टोर से आसानी से इंस्टॉल किया जा सकता है।

कितना दमदार इंजन

कंपनी की ओर से इस स्कूटर में 125 सीसी का एयर कूल्ड फोर स्ट्रोक, एसओएचसी इंजन दिया जाता है। जिससे इसे छह किलोवाट की पावर और 10.3 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। स्कूटर में फ्यूल इंजेक्शन सिस्टम, स्टॉप/स्टार्ट सिस्टम, स्मार्ट मोटर जेनरेटर सिस्टम जैसे कई फीचर्स को दिया जाता है।

कितनी है कीमत

कंपनी की ओर से आंसर बैक फीचर के साथ इस स्कूटर की एक्स शोरूम कीमत 93730 रुपये तय की है। इसके अलावा इसके गहरे मैट नीले रंग वाले वेरिएंट को 94530 रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है।

कार्तिक आर्यन की करोड़ों की कार में चूहों ने किया नुकसान, जानें आप अपनी कार को कैसे बचाएं

बॉलीवुड के स्टार Kartik Aryan की बेहद महंगी कार को भी चूहों से काफी नुकसान हुआ है। आम आदमी भी अपनी कार में चूहों से परेशान रहते हैं। इस परेशानी से बचने के लिए लोग तरह तरह के उपायों को अपनाते हैं। लेकिन किन बातों का ध्यान रखते हुए अपनी कार को चूहों से बचाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। बॉलीवुड स्टार Kartik Aryan को भी अन्य सितारों की तरह लग्जरी और स्पोर्ट्स कारों का शौक है। उनकी McLaren GT सुपरकार को चूहों से बड़ा (Rats In Car) नुकसान हुआ है। बॉलीवुड स्टार के साथ ही कई आम आदमी भी इस समस्या से परेशान रहते हैं। अगर आप भी चाहते हैं कि Kartik Aryan की कार की तरह आपकी कार को भी चूहे खराब न करें, तो किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लापरवाही से होती है परेशानी

कार में सफर के दौरान कई लोग लापरवाही बरतते हैं, जिस कारण कार में चूहे आने का खतरा बढ़ जाता है। इसके अलावा भी कई तरह की लापरवाहियों के कारण चूहे कार को बड़ा नुकसान पहुंचाते हैं। अगर कुछ बातों का ध्यान रखा जाए तो फिर अपनी कार को चूहों से आसानी से सुरक्षित रखा जा सकता है।

कार में न छोड़ें खाना

कार में सफर के दौरान कई लोग खाना खाते हैं, लेकिन बाद में सही तरह से सफाई न करने के कारण खाना गाड़ी में ही रह जाता है। इसके अलावा कुछ लोग कार में खाने का सामान भी छोड़ देते हैं। जिसकी गंध से चूहे आकर्षित होते हैं और कार को नुकसान हो जाता है। इसलिए कोशिश करें कि कार में खाना न खाएं। इसके साथ ही गाड़ी में खाने का सामान भी न छोड़ें।

कार का करें उपयोग

कुछ लोग अपनी कार को एक बार पार्क करने के बाद लंबे समय तक उपयोग में नहीं लाते। ऐसा करने से भी कार खराब होने का खतरा बढ़ जाता है। एक ही जगह पर लंबे समय तक कार के खड़े रहने के कारण चूहे उसे अपना घर बना लेते हैं। अगर कार को सुरक्षित रखना है तो कार का लगातार उपयोग करते रहें।

इन तरीकों को भी अपनाएं

कार को चूहों से दूर रखने के लिए नेफ्थलीन की बॉल्स का भी उपयोग किया जा सकता है। इसके अलावा रिपलेंट स्प्रे, पेपरमिंट ऑयल या तंबाकू के पत्तों का गुच्छा बनाकर भी कार में रखने से चूहों को कार से दूर रखा जा सकता है।

नई सरकार से मजबूत होगी आर्थिकी

डा. जयंती लाल भंडारी

चूंकि भारत लगातार चालू खाते के घाटे से जूझ रहा है और भारत को विदेशी बचतों को हासिल करने की जरूरत है, इसलिए एफडीआई भारत में विदेशी बचतों के सबसे टिकाऊ स्रोत के रूप में लाभप्रद होगा। भारत की विकास दर के 8.2 प्रतिशत रहने से नई सरकार को व्यय प्रबंधन में मदद मिलेगी'

चार जून को 18वीं लोकसभा चुनाव के परिणाम आने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि अब बनने वाली एनडीए के तीसरे कार्यकाल की नई सरकार देश को आर्थिक विकास की डगर पर तेजी से आगे बढ़ाएगी। निश्चित रूप से देश को एक बेहतर आर्थिक परिवेश के साथ बेहतर मानसून की सौगातें विरासत में मिलते हुए दिखाई दे रही हैं। स्थिति यह है कि देश की बेहतर आर्थिकी के परिप्रेक्ष्य में दुनिया की क्रेडिट रेटिंग एजेंसियां यह कहते हुए दिखाई दे रही हैं कि भारत में कोई भी सरकार बने, अब आर्थिकी तेज गति से मजबूत होगी। खास बात यह भी है कि 7 जून को एनडीए के संसदीय बोर्ड की बैठक में जिस तरह से गठबंधन के समर्थक नेताओं के द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सराहना दी गई और विकसित भारत के लिए हर तरह का योगदान देने का संकल्प दोहराया गया, उससे निश्चित रूप से देश की अर्थव्यवस्था और तेज गति से आगे बढ़ेगी।

उल्लेखनीय कि हाल ही में केंद्रीय सांख्यिकी संगठन ने वर्ष 2023-24 में देश की विकास दर 8.2 फीसदी रहने संबंधी रिपोर्ट जारी की है। वैश्विक क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों के मुताबिक आर्थिक व वित्तीय बाजार मजबूत हो रहे हैं। भारत के वित्तीय और गैर वित्तीय क्षेत्रों के दमदार बही-खाते भारत की आर्थिक ताकत बढ़ा रहे हैं। रिजर्व बैंक के द्वारा भारत सरकार को दिया गया रिकॉर्ड लाभांश, वैश्विक आर्थिक संगठनों के द्वारा भारत के विकास के नए-नए प्रभावी विश्लेषण प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इन सबके साथ-साथ नई सरकार से देश की अर्थव्यवस्था को नई शक्ति मिलने की संभावनाओं से देश की अर्थव्यवस्था मजबूती के साथ आगे बढने के शुभ संकेत देते हुए दिखाई दे रही है।

गौरतलब है कि हाल ही में दुनिया की प्रसिद्ध क्रेडिट रेटिंग एजेंसी एसऐंडपी ने भारत की मजबूत आर्थिक वृद्धि, तेज आर्थिक सुधार और बढ़ती राजकोषीय मजबूती के मद्देनजर भारत की रेटिंग को स्थिर यानी स्टेबल से बदलकर पॉजिटिव कर दिया है। रेटिंग एजेंसी का कहना है कि पिछले तीन साल में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की औसत वास्तविक वृद्धि दर 8.1 फीसदी सालाना रही है और अब यह विकास दर अगले तीन साल में लगातार 7 फीसदी के करीब होगी। दुनिया के प्रसिद्ध इन्वेस्टमेंट बैंकर गोल्डमैन सैक्स ने अपनी नई रिपोर्ट में कैलेंडर वर्ष 2024 में भारत की विकास दर को बढ़ाकर 6.7 प्रतिशत कर दिया है। चालू वित्त वर्ष में विकास दर बढने संबंधी अन्य महत्वपूर्ण नई रिपोर्टों के तहत अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने 6.8 प्रतिशत, एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने 7 प्रतिशत तथा विश्व बैंक ने 7.5 प्रतिशत विकास दर रहने के अनुमान व्यक्त किए हैं। देश और दुनिया के प्रमुख अर्थ विशेषज्ञों का मत है कि भारत की विकास दर आगामी दशक तक 6.5 से 7 प्रतिशत के स्तर पर दिखाई देगी। विभिन्न आर्थिक रिपोर्टों में इस बात को भी रेखांकित किया जा रहा है कि भारत में वर्ष 2023-24 में प्रत्यक्ष कर (डायरेक्ट टैक्स) संग्रह 17.7 फीसदी बढक़र 19.58 लाख करोड रुपए हो गया है। इसी तरह से 2023-24 में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) उच्चतम स्तर पर रहा है। इसका आकार 20.18 लाख करोड़ रुपए रहा है, जो कि पिछले वर्ष की तुलना में 11.7 फीसदी अधिक है। कर संग्रह के ये चमकीले आंकड़े भारतीय अर्थव्यवस्था में तेज उछाल और व्यक्तियों तथा कॉरपोरेट सेक्टर की आमदनी में वृद्धि को दर्शाते हैं।

इसमें कोई दो मत नहीं हैं कि जिस तरह से रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के द्वारा हाल ही में भारत सरकार के लिए अब तक के सबसे अधिक लाभांश की राशि सुनिश्चित की गई है, वहीं दूसरी ओर देश के शेयर बाजार ने पिछले 10 वर्षों में जो ऊंचाइयां प्राप्त की हैं, उससे दुनिया भर में भारत के नए तेज विकास की नई संभावनाएं आगे बढ़ी हैं। रिजर्व बैंक ने वित्त वर्ष 2023-24 में सरकार को 2.11 लाख करोड़ रुपए लाभांश देने की मंजूरी दी है। चालू वित्त वर्ष 2024-25 के अंतरिम बजट में सरकार ने रिजर्व बैंक और सरकारी बैंकों के लाभांश से 1.02 लाख करोड़ रुपए मिलने का अनुमान लगाया था। ऐसे में रिजर्व बैंक द्वारा दिया जाने वाला लाभांश बजट अनुमान की तुलना में 107 फीसदी ज्यादा है। यह एक तरह से सरकार के लिए मौजूदा वित्त वर्ष में 1.09 लाख करोड़ रुपए के अप्रत्याशित लाभ जैसा है। इतना ही नहीं, रिजर्व बैंक ने पहली बार आकस्मिक जोखिम बफर (सीआरबी) बढ़ाकर 6.5 फीसदी कर दिया गया है, जो पहले 6 फीसदी था। रिजर्व बैंक ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत बनी हुई है, इसीलिए वित्त वर्ष 2023-24 के लिए आकस्मिक जोखिम बफर बढ़ाकर 6.5 फीसदी करने का निर्णय लिया गया है। उल्लेखनीय है कि रिजर्व बैंक के द्वारा सरकार को रिकॉर्ड लाभांश के दिए जाने के निर्णय और वैश्विक आर्थिक संगठनों व वैश्विक क्रेडिट एजेंसियों के द्वारा वर्ष 2024-25 में भारत की ऊंची विकास दर के अनुमानों के बाद भारतीय शेयर बाजार को लाभ मिला। यह उल्लेखनीय है कि शेयर बाजार और निवेशकों को उम्मीद थी कि 4 जून के लोकसभा चुनाव परिणामों से भाजपा और एनडीए को भारी बढ़त मिलेगी, लेकिन चुनाव में भारी अनुमान के मुताबिक ऊंचाई नहीं होने के कारण शेयर बाजार की उम्मीदें पूरी नहीं हो पाई हैं।

फिर भी यह कोई छोटी बात नहीं है कि बीएसई में सूचीबद्ध कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण पांच लाख करोड़ डॉलर के पार पहुंचने के साथ ही भारत इस मुकाम तक पहुंचने वाला दुनिया का पांचवां सबसे बड़ा देश बन गया है। कोरोना काल के बाद भारतीय घरेलू खुदरा निवेशकों की रुचि शेयर बाजार में बढ़ी है। साथ ही पिछले 10 साल में डीमेंट अकाउंट 2.3 करोड़ से बढक़र 15 करोड़ हो गए हैं और म्यूचुअल फंड निवेशकों की संख्या एक करोड़ से बढक़र 4.5 करोड़ हो गई है। स्थिति यह है कि पिछले 10 साल में शेयर बाजार कहां से कहां पहुंच गया है। लाखों छोटे निवेशक आज उत्साहपूर्वक बाजार से जुड़े हैं। भारत दुनिया का चौथा सबसे बड़ा शेयर बाजार है और वैश्विक निवेशकों का भरोसा भी भारत के शेयर बाजार पर बढ़ा है। अब ऐसी आर्थिक मजबूती से देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में वृद्धि होगी। यह देश की उत्पादक क्षमता बढ़ाएगा और वृद्धि की संभावनाओं को बेहतर करेगा। इसमें कोई दो मत नहीं हैं कि भारत के प्रति बढ़ते आर्थिक आकर्षण से न केवल देश में ज्यादा एफडीआई लाने में मदद मिलेगी, बल्कि यह विदेशी कंपनियों और निवेशकों को इस बात के लिए भी प्रोत्साहित करेगा कि वे भारत से हुई कमाई को फिर भारत में ही निवेश करने के लिए तत्पर रहें।

इससे भारत में कारोबारी माहौल में सुधार होगा। यह सुधार उन घरेलू निवेशकों को भी बड़े पैमाने पर निवेश बढ़ाने के लिए प्रेरित करेगा जो अभी किनारे बैठकर निवेश करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। एफडीआई का एक महत्त्वपूर्ण पहलू यह भी है कि विदेशी निवेशक तकनीकी विशेषज्ञता भी लाते हैं। चूंकि भारत लगातार चालू खाते के घाटे से जूझ रहा है और भारत को विदेशी बचतों को हासिल करने की जरूरत है, इसलिए एफडीआई भारत में विदेशी बचतों के सबसे टिकाऊ स्रोत के रूप में लाभप्रद होगा। निश्चित रूप से वर्ष 2023-24 में भारत की विकास दर के 8.2 प्रतिशत रहने, शेयर बाजार के बढने, रिजर्व बैंक द्वारा सरकार को 2.11 लाख करोड़ रुपए का बंपर लाभांश दिए जाने से नई सरकार को व्यय प्रबंधन में खासी मदद मिलेगी। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि फरवरी 2024 में संसद में पेश किए वित्त वर्ष 2024-25 के अंतरिम बजट में सरकार ने 5.1 प्रतिशत राजकोषीय घाटे का लक्ष्य रखा है। केंद्र सरकार राजकोषीय मार्ग के तहत वित्त वर्ष 2025-26 तक राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद के 4.5 प्रतिशत पर लाना चाहती है।

संपादक की कलम से

तीसरी ताजपोशी

नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बने हैं। जिस दौर में यह प्रतिष्ठा और स्वीकृति जवाहर लाल नेहरू को मिली थी, तब कांग्रेस का ही वर्चस्व था। तीनों बार कांग्रेस को बहुमत हासिल हुआ था। आज स्थानीय और क्षेत्रीय स्तर पर राजनीतिक दलों का प्रभाव है, लिहाजा जनादेश भी विभाजित और खंडित आते हैं। बेशक मोदी प्रधानमंत्री बने हैं, लेकिन उनकी पार्टी भाजपा को बहुमत हासिल नहीं हुआ है। वह 240 सीटें ही जीत सकी है। मोदी भाजपा-एनडीए संसदीय दल के नेता के तौर पर प्रधानमंत्री बने हैं। गठबंधन को 293 सीटें मिली हैं। विविधता का ऐसा गठबंधन चमत्कार से कम नहीं है, लिहाजा लगातार तीसरी बार की ताजपोशी भी चमत्कार है। सवाल और संदेह उठाए जा रहे हैं कि चंद्रबाबू नायडू की तेलुगूदेशम पार्टी (टीडीपी) और नीतीश कुमार का जद-यू आखिर कब तक मोदी सरकार का समर्थन करते रहेंगे? वे दोनों दल आंध्रप्रदेश और बिहार में भाजपा गठबंधन में हैं। आंध्र के नए जनादेश में प्रधानमंत्री मोदी के आह्वानों और संबोधनों का भी योगदान है, नतीजतन नायडू 12 जून को मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे। बेशक नायडू 2019 में विपक्षी गठबंधन का एक हिस्सा थे और नीतीश ने 2023 तक विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' को लामबंद करने की कोशिशें कीं, लेकिन यह उनका 'राजनीतिक अतीत' था। अब वे पूरी तरह मोदी और भाजपा के साथ हैं। आम चुनाव भी साथ-साथ लड़े हैं।

वे परस्पर पूरक हैं, क्योंकि आंध्र और बिहार को केंद्र सरकार से जो आर्थिक मदद चाहिए, वह मोदी सरकार ही दे सकती है। आंध्र पर 3.5 लाख करोड़ रुपए से अधिक का कर्ज है और उसे अपनी नई राजधानी बनानी है। हालांकि मोदी सरकार के पहले कालखंड के दौरान नायडू की ऐसी ही मांगों के कारण केंद्र से खटपट हुई थी। आज टीडीपी 16 सांसदों के साथ एनडीए की दूसरी सबसे बड़ी पार्टी है और भाजपा की सरकार उसके भरोसे है। हमें नायडू की राजनीतिक शख्सियत के एक और पहलू पर भी ध्यान देना चाहिए कि वह बेहिसाब सियासी मोल-तोल के अभ्यस्त हैं। बहरहाल प्रधानमंत्री मोदी ने अगले दशक के लिए सुशासन, समग्र विकास और आम आदमी की जिंदगी में सुधार के लक्ष्य तय किए हैं, लेकिन कुछ विरोधाभास ऐसे हैं कि सुशासन के लिए जरूरी आर्थिक नीतियां प्रभावित हो सकती हैं। आंध्र-बिहार को विशेष दर्जा, अग्निवीर योजना, मुस्लिम आरक्षण और तुष्टिकरण, जातीय जनगणना, समान नागरिक संहिता आदि आर्थिक मुद्दे नहीं हैं, लेकिन इनके कारण सुशासन, समावेशी, समन्वय की दशा और दिशा जरूर प्रभावित होगी। यदि ये प्रभाव और दबाव प्रधानमंत्री मोदी को महसूस करने पड़ते हैं, तो सरकार और सुशासन के इकबाल पर सवाल उठाए जा सकते हैं। यह यक्ष-प्रश्न देश के सामने है कि ऐसे विरोधाभासी गठबंधन वाली सरकार कब तक चलेगी? आंध्र और बिहार दोनों ही विपन्न राज्य हैं। उन्हें केंद्र सरकार की विशेष आर्थिक मदद की दरकार है। राज्यों को 'विशेष दर्जा' दिया जाए, यह मुद्दा और मांग दोनों ही राज्यों में प्रबल है।

इस संदर्भ में वित्त आयोग और नीति आयोग की अपनी सीमाएं हैं। नायडू और नीतीश की विवशता यह भी है कि उन्हें अनुभव है कि यदि विपक्षी गठबंधन में शामिल हुआ जाए, तो कांग्रेस नेतृत्व की सरकार उन्हें आर्थिक मदद नहीं देगी, बल्कि मध्यावधि चुनाव के आसार ज्यादा बन जाएंगे, लिहाजा दोनों नेता फिलहाल मोदी सरकार के साथ ही रहना चाहते हैं। नायडू और नीतीश जानते हैं कि गठबंधन को लेकर देश उन पर शक कर रहा है, क्योंकि मानसिक तौर पर वे भाजपा-विरोधी राजनीति के पक्षधर रहे हैं, लिहाजा वे आगामी 5 साल भाजपा के साथ गठबंधन में रहने की गारंटी दे रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी का आकलन गुजरात के मुख्यमंत्री काल या बहुमत वाले प्रधानमंत्री से नहीं किया जाना चाहिए। अब नया दौर है और मोदी संगठन के माहिर नेता रहे हैं। मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बने हैं, लिहाजा वह सत्ता की वर्णमाला बखूबी जानते हैं। मोदी पार्टी संगठन से सरकार में आए हैं और लगातार 23 साल से सत्तारूढ़ हैं। यह अनुभव सामान्य नहीं है। वह बिखरे हुए संगठन को एकजुट करना जानते हैं। फिलहाल एनडीए के सभी घटकों ने उनके नेतृत्व में भरोसा जताया है।

ज्ञान

पर्यटन की नई चोटियां

ग्रीष्म कालीन पर्यटन की शिनाख्त में हिमाचल की नई चोटियां चुनी जा रही हैं, मानो पूरे प्रदेश का यात्रा वत्तांत चूड़धार, बिजली महादेव, शिकारी देवी, हिमानी चामुंडा या त्रियूंड हो गया। पहाडियां और भी हैं और चोटियों पर पर्यटन का सुरूर और भी है, लेकिन तीव्रता से फैल रहे नए पर्यटन को समझना होगा। हिमाचल से वाकिफ होते सैलानियों का एक ऐसा वर्ग सामने आ रहा है, जो अपनी तरह के अनुभव और यात्रा के अद्भुत वत्तांत का पात्र होना चाहता है। वह हिमाचल के परिचय से खुद परिचित होना चाहता है, इसलिए पर्यटन के डेरे जब चूड़धार पर लगते हैं, तो चुनौतियां भी रू-ब-रू होती हैं। फिलहाल हम बिना किसी तैयारी के चोटियों पर चढ़ते सैलानी को देखकर खुश हैं, लेकिन ये मंजिलें सहेजने और संभलने की भी हैं। इस बार सप्ताहांत पर्यटन की शाखा पर चढ़ा हिमानी चामुंडा का आकर्षण पंद्रह हजार लोगों का जमावड़ा देख चुका है। इसके मायने न धार्मिक आस्था में पूरे होते हैं और न ही पर्यटन आर्थिकी में मजबूत हो रहे हैं। यही सब शिकारी देवी के प्रांगण में खचाखच भीड़ में देखा जा रहा है। यह दीगर है कि इससे पर्यटन की नई परिभाषा, जरूरत, आकर्षण और विकास गाथा दिखाई देती है। पंद्रह हजार पर्यटकों से भरी हिमानी चामुंडा की एक रात्रि में हम वही नजारा देख रहे हैं, जो हरिद्वार के एक दिन में हजारों की भीड़ में देखते हैं। अंतर यह कि हिमानी चामुंडा में अधोसंरचना, सुरक्षा व्यवस्था, आम सुविधाएं व भीड़ नियंत्रण इतना सक्षम नहीं कि कुछ अर्थ या निष्कर्ष निकाला जाए।

कमोबेश यही हाल ऐसे सभी स्थलों का है जहां युवा सैलानी प्रकृति के नजदीक कुछ समय गुजारना चाहते हैं। हकीकत यह कि गर्मियों का पर्यटक अब मनाली, मकलोडगंज, डलहौजी और शिमला से कहीं आगे पहाड़ की कंद्राओं में छिपे आकर्षण और सुकून के पल में अपना अनुभव गुजारना चाहता है। ऐसे में हिमाचल की अपनी पर्यटन परियोजनाओं को फिर से मांजना पड़ेगा और इसके लिए सैलानियों की रुचि का नख-शिख वर्णन चाहिए। वैसे तो सैलानी को ऊना, सिरमौर, पांवटा साहिब, काला अंब या नूरपुर के प्रवेश द्वारों पर ही रोकने व मनोरंजन करने की अधोसंरचना विकसित करनी चाहिए, लेकिन अब बात मनाली, मकलोडगंज या शिमला से आगे की है। एक हफ्ते में मनाली सुरंग के आर पार आधा लाख गाडियां गुजर रही हैं, तो इस संभावना के अक्स में हिमाचल की क्षमता का विकास लाहुल-स्पीति के पर्यटन को हाई एंड टूरिज्म से जोडक़र ही पूरा होगा। अगर चामुंडा देवी का तीर्थाटन अब हिमानी चामुंडा की चढ़ाई चढ़ कर पूरा हो रहा है, तो इस परिदृश्य में वैष्णो देवी की तर्ज पर ढांचागत, व्यवस्थागत और भविष्यगत त्वरित विकास होना चाहिए। अगर कांगड़ा को पर्यटन की राजधानी बनाना है, तो हिमानी चामुंडा की संभावना में हिमाचल मंदिर पर्यटन के स्वरूप में एक बड़ी आर्थिक संरचना कर सकता है, वरना किसी सडक़ पर भारत का ऊंचा म्यूजिकल फाउंटेन खड़ा करके भी पर्वत की तासीर में सैलानी को सुकून नहीं मिलेगा। हमें चूड़धार, त्रियूंड, बिजली महादेव, शिकारी देवी व इसी तरह के अन्य स्थलों को भविष्य के पर्यटन से जोडक़र विकसित करना होगा। इतना ही नहीं युवा पर्यटक की खासियत को श्रीखंड व मणिमहेश यात्राओं के मंजर के अलावा खेल, संगीत, ट्राइबल, फूड, शीतकालीन, सिने, प्राकृतिक वनस्पति एवं फूल पर्यटन से भी जोडना होगा। हिमाचल में भविष्य का पर्यटन रोजाना निजी वोल्वो बसों से उतर कर पूर्व निर्धारित दिशा में किसी पर्वतीय चोटी की राह पकड़ रहा है और इसी रास्ते से आर्थिकी भी आएगी, बशर्ते परियोजनाएं इन संभावनाओं के दोहन के लिए माकूल अधोसंरचना, सुविधाएं व सुकून को प्रशस्त करें।

उनासी कितने होते हैं, पापा?

कारणों की और गहराई में जाने से पता चलता है कि अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा की प्राप्ति का प्रचलन हिंदी भाषा की दुर्गति का सबसे बड़ा कारण बना है। अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई करवा कर समाज में दूसरे बच्चों से एक मनोवैज्ञानिक बढ़त बनाने की होड़ भी इसके लिए काफी हद तक जिम्मेदार है। अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने के निःसंदेह कुछ लाभ युवा पीढ़ी को मिले होंगे, लेकिन इन लाभों की कीमत हिंदी की गिनती को अपना अस्तित्व खोकर चुकानी पड़ेगी, यह शायद किसी ने कभी नहीं सोचा होगा'

उनासी ही नहीं, बल्कि हिंदी में गिनती के बहुत से साधारण अंकों को भी आज की युवा पीढ़ी समझ पाने में असमर्थ हो चुकी है। मनोविज्ञान यह कहता है कि इनसान अपनी कमी को छुपाना चाहता है, ताकि उसकी कमियों का पता दूसरों को न चल सके, लेकिन इस मामले में यह मनोविज्ञान भी फेल हो चुका है क्योंकि हिंदी में अंकों को समझ न पाने की अपनी इस कमी को छुपाने और इसमें सुधार की बजाय आज की युवा पीढ़ी इस कमी का आनंद उठाने में व्यस्त है। हिंदी में गिनती के अंकों को समझ न पाने की कमजोरी के साथ बड़ी होती भारत की यह युवा पीढ़ी अपनी इस कमी को अपनी कमजोरी नहीं, बल्कि एक शक्ति समझने की गलती भी करती जा रही है। सबसे हैरान करने वाली बात तो यह है कि आज जिस अंदाज में इन अंक संबंधी सवालों को सामने वाले से पूछा जाता है उससे यह प्रतीत होता है कि इस नई पीढ़ी के नुमाइंदे इसको अपनी कमजोरी नहीं बल्कि इसे अपनी प्रतिष्ठा का एक सूचक मानते हैं। आज हालात ये हैं कि जैसे ही हिंदी की गिनती का कोई शब्द उनके कानों के परदे पर दस्तक देता है, तो वैसे ही उनकी जुबान पर सवाल तैयार हो जाता है कि, ये कितने होते हैं? बच्चे सवाल दागते हैं तो माता-पिता उस अंक का अंग्रेजी रूपांतर करके बच्चे की जिज्ञासा को शांत कर देते हैं और अपने बच्चे की कमी को बड़े अंदाज से नजरअंदाज भी कर देते हैं। यहां पर माता-पिता का मनोविज्ञान भी विपरीत काम कर रहा है।

अमूमन माता-पिता अपने बच्चों की कमजोरी को भांप कर उसमें सुधार के लिए कोशिश करते हुए देखे जाते हैं, लेकिन इस मामले में माता-पिता भी अपने बच्चे की इस आधारभूत कमी के प्रति गौरव महसूस करते हुए बड़ी प्रसन्नता से हिंदी के अंक का अंग्रेजी रूपांतर कर देते हैं। हालांकि अब ये प्रश्न घरों की दहलीज को पार कर विद्यालयों और बाजारों में भी आम तौर पर पूछे जाने लगे हैं। सबसे मजेदार बात यह है कि आज एक दसवीं पास या अनपढ़ व्यापारी से ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट हो चुका युवा भी ऐसे प्रश्न पूछ कर अपनी शिक्षा की धज्जियां उड़ाते हुए देखा जा सकता है। क्योंकि एक अनपढ़ व्यक्ति खुद को हिंदी अंकों का अंग्रेजी में रूपांतर करने में सक्षम बना चुका है, लेकिन एक ग्रेजुएट या पोस्ट ग्रेजुएट युवा खुद को हिंदी के अंकों को समझने के योग्य नहीं बना पा रहा है। हिंदी गिनती के इतनी तेजी से हाशिए पर जाने के कुछ प्रमुख कारणों पर अगर नजर दौड़ाई जाए, तो उनमें से सबसे प्रमुख कारण पिछले कुछ वर्षों में कॉन्वेंट प्रथा और अंग्रेजी माध्यम का प्रचलन बढना है। अंग्रेजी एक भाषा है और भाषा से संप्रेषण आसान बनता है, लेकिन अंग्रेजी अब संप्रेषण का माध्यम होने से कहीं ज्यादा आगे निकलकर पढ़ाई करने का माध्यम बन गई है। अंग्रेजी सीखना कोई बुरी बात नहीं है, लेकिन अंग्रेजी सीखने के लिए अपनी हिंदी को भूलना बेशक बुरी बात है। आज विद्यालयों की अपेक्षा घरों में भी अंग्रेजी गिनती को सिखाने पर ज्यादा जोर लगाया जाता है। एक-दो का स्थान अब वन-टू ने ले लिया है। आजकल पुरानी दादियां अगर बच्चों को हिंदी में गिनती सिखाती हैं तो उनको कई बार परिवार के पश्चिमी सभ्यता के दीवानों के गुस्से का शिकार भी होना पड़ता है।

जबकि पहले ऐसा नहीं था और परिवार के बुजुर्ग सदस्य बच्चे के होश संभालते ही उसको घर से ही हिंदी की गिनती और वर्णमाला सिखाना आरंभ कर देते थे। पुराने बुजुर्गों द्वारा अपने बच्चों को घर पर हिंदी की गिनती सिखाए जाने से हिंदी गिनती का एक पहाड़ी संस्करण भी उपलब्ध था, जोकि धीरे धीरे अब लुप्त होता जा रहा है। इसके अलावा आजकल संयुक्त परिवारों का प्रचलन भी कम होता जा रहा है। संयुक्त परिवार में सीखने के सबसे ज्यादा मौके मिलते हैं क्योंकि परिवार का हर सदस्य अपना एक अलग अंदाज रखता है। बड़े परिवारों में संदेशवाहन की रफ्तार अधिक होती है और परिवार के अगर एक-दो सदस्य भी हिंदी की गिनती का उपयोग अपने दैनिक कार्यों में करते हैं, तो बच्चे वहीं से इसको सीख जाते हैं। आज छोटे परिवारों में ऐसी कोई बात नहीं है। कारणों की और गहराई में जाने से पता चलता है कि अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा की प्राप्ति का प्रचलन हिंदी भाषा की दुर्गति का सबसे बड़ा कारण बना है। अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई करवा कर समाज में दूसरे बच्चों से एक मनोवैज्ञानिक बढ़त बनाने की होड़ भी इसके लिए काफी हद तक जिम्मेदार है। अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने के निःसंदेह कुछ लाभ युवा पीढ़ी को मिले होंगे, लेकिन इन लाभों की कीमत हिंदी की गिनती को अपना अस्तित्व खोकर चुकानी पड़ेगी, यह शायद ही किसी ने कभी नहीं सोचा होगा।

हिंदी में गिनती पर बच्चों की पकड़ पिछले लगभग पंद्रह से बीस वर्षों में बहुत तेजी से कमजोर हुई है और यह कमजोरी अब कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर तक के विद्यार्थियों में भी देखने को मिल रही है। अभी तो हमारी पुरानी पीढ़ी हिंदी गिनती के अनुवाद के लिए उपलब्ध है और सक्षम भी है, लेकिन आने वाले बीस वर्षों के बाद यह भी हो सकता है कि इस अनुवाद के लिए घर में कोई उपलब्ध न हो और ऐसे अनुवाद के लिए पड़ोस से या ऑनलाइन मदद लेनी पड़े। खैर हालात ये बता रहे हैं कि हिंदी की गिनती फिलहाल अपनी आखिरी सांसें गिन रही है और इसको इस हालात से बाहर निकालने के लिए कुछ कारगर कदम उठाने की जरूरत है, ताकि हिंदी की अंकमाला का अस्तित्व आने वाली पीढियों के लिए बचा रह सके।

राकेश शर्मा

शव संवाद-47

किसी बुद्धिजीवी के घर की घंटी बजाना अपने आप में एक कला है। वह हवाओं तक को इसकी इजाजत नहीं देता, फिर भी हर चुनाव ने इसकी मजबूती पर प्रहार किया है। उस दिन भिखारी ने बजाई तो उसे आश्चर्य हुआ कि बुद्धिजीवी का घर सुन नहीं रहा, बल्कि भीतर से निष्पक्ष आवाज आई, 'आगे बढ़ जाओ, यह घर भीख नहीं, उपदेश दे सकता है, सुनना चाहो अगर कि देश ने भिखारी क्यों बनाया, तो रुको।' ऐसा नहीं कि भिखारी को ही बुद्धिजीवी का घर निराश करता है, बल्कि फकीर भी थैला उठाए इसी घंटी से निराश हुआ है। वह इस घर के पास आकर न राम और न ही रहीम के नाम पर घंटी बजाता है। यह घंटी हर बजाने वाले का मुलम्मा उतार देती है। अकसर बजाने वाले यह तय नहीं कर पाते कि बुद्धिजीवी उनसे कमजोर है या उनसे भी अधिक भिखारी या फकीर है। घंटी की हालत से बुद्धिजीवी की हालत का पता चल जाता है, बल्कि घंटी ने ही उसे ऐसा इनसान बना दिया जो सुनने के बजाय हर दम सुनाना चाहता है। उस दिन चुनाव ने बुद्धिजीवी के घर की घंटी क्या बजाई, इसकी आवाज बंद हो गई।

भिखारियों -फकीरों को भगाने वाली घंटी चुनाव प्रचार को भगाने से पहले मर चुकी थी। चुनाव हर दिन नई पार्टी को लेकर आता और इसे खूब बजाता, लेकिन एक बार क्या मरी, बुद्धिजीवी की घंटी ने सदा के लिए प्राण छोड़ दिए।

बावजूद इसके चुनाव बुरी-बुरी घंटियों की तरह बुद्धिजीवी के जेहन में बज रहा था। गली तक पहुंचे चुनाव ने उसकी घंटी बर्बाद कर दी, अब वह घर के भीतर से किसे कोसेगा। चुनाव अब भी मोहल्ले की घंटियां बजा रहा था और लोग बाग सुन रहे थे, लेकिन बुद्धिजीवी की यह सुविधा भी खत्म हो गई। अंततः अपने लोकतांत्रिक अधिकारों की कतरनों में मर चुकी घंटी को उठाए बुद्धिजीवी पुलिस प्रमुख के पास पहुंच गया। बुद्धिजीवी अपनी फरियाद में बता रहा था कि उसके घर की घंटी को चुनाव ने मारा है, अतः मुकदमा दर्ज हो। पुलिस मुखिया ने घंटी की नस्ल देखी और सलाह देने लगा, 'यह घंटी साधारण कानून में नहीं आती, अतः सरकार को बताओ।' बुद्धिजीवी प्रशासन के पास पहुंच गया तो उसे वहां से भी केवल यही उत्तर मिला कि घंटियों का बजना अब असंसदीय ध्वनि मानी गई है, अतः इसे चुनाव की आचार संहिता के पास ले जाओ। बुद्धिजीवी के लिए घंटी अब नागरिक समाज के मनोबल को उठाने की एकमात्र वस्तु बची थी, अतः वह जैसे ही चुनाव आयोग की तरफ बढ़ा, तभी घंटी की लाश बोली, 'मुझ पर रहम करो। मेरी बहनें पहले ही वहां गेट पर खड़ी हैं, लेकिन वे चाहकर भी नहीं बज पातीं।'

बुद्धिजीवी को घंटी की लाश, घंटी की बात पर यकीन न हुआ। पुलिस-प्रशासन और घंटी की लाश द्वारा मना करने के बावजूद बुद्धिजीवी आगे बढ़ रहा था ताकि बता सके कि चुनाव प्रचार से किस तरह नागरिकों के घरों की घंटियां मर रही हैं। वह अपने घर की घंटी की मौत के लिए चुनाव से हर्जाना चाहता था। उसे जबरन रोक दिया गया। देश का कानून और चुनाव की आचार संहिता की अवहेलना में बुद्धिजीवी इस बार भी पकड़ा गया। तभी कहीं से मुस्कराता हुआ चुनाव उसके पास पहुंचा। उसके हाथ में एक नए मंदिर की घंटी पकड़ा कर चुनाव ने उसे बजाने का हुक्म दिया। यह घंटी बज तो रही थी, लेकिन इस आवाज को बुद्धिजीवी स्वयं भी सुन नहीं पा रहा था। सामने नारेबाजी के शोर ने उसे बता दिया कि जीतने के लिए अब नागरिकों के हाथों में चुनाव खुद ही घंटी बजाएगा। -क्रमशः

निर्मल असो

एनडीए सरकार को बेरोजगारी दूर करने पर रखना होगा फोकस, नीति आयोग के पूर्व वाइस चेयरपर्सन राजीव

परिवहन विशेष न्यूज

नई सरकार के सामने कई चुनौतियां मौजूद है। नई सरकार के सामने खड़ी चुनौती पर नीति आयोग (NITI Aayog) के पूर्व वाइस चेयरपर्सन राजीव कुमार ने सलाह दी है। न्यूज एजेंसी पीटीआई को इंटरव्यू देते हुए राजीव कुमार ने कहा कि NDA Government को बेरोजगारी की समस्या को खत्म करना होगा। दरअसल देश में इस वक्त बेरोजगारी एक बड़ी समस्या बना हुआ है।

नई दिल्ली। रविवार को देश में नई सरकार का गठन हो गया है। रविवार को लागातर तीसरी बार नरेंद्र मोदी ने प्रधानमंत्री पद के लिए शपथ ली थी। आज उन्होंने प्रधानमंत्री का कार्यभार भी संभाल लिया।

इस बार देश में एनडीए की सरकार (NDA Government) यानी गठबंधन की सरकार बनी है। ऐसे में नई सरकार के सामने कई चुनौतियां मौजूद है। नई सरकार के सामने खड़ी चुनौती पर नीति आयोग (NITI Aayog) के पूर्व वाइस चेयरपर्सन राजीव कुमार ने सलाह दी है।

क्या कहते है राजीव कुमार

न्यूज एजेंसी पीटीआई को इंटरव्यू देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) सरकार को बेरोजगारी की समस्या को खत्म करना होगा। दरअसल, देश में इस वक्त बेरोजगारी एक बड़ी समस्या बना हुआ है।

ऐसे में राजीव कुमार ने इस बात पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि बेरोजगारी को कम करने में पहले ही देरी हो चुकी है। ऐसे में अगर और देरी होती है तो इसका असर देश की इकोनॉमी पर पड़ेगा।

राजीव कुमार ने एक साक्षात्कार में पीटीआई को बताया

हमें यह समझना चाहिए कि कोविड के बाद आर्थिक सुधार K-आकार की रिकवरी रही है। मुझे लगता है कि मोदी सरकार को सबसे महत्वपूर्ण सुधार बेरोजगारी की समस्या से निपटना होगा, खासकर असंगठित और छोटे और मध्यम उद्यमों में।

देश में 83 फीसदी युवा बेरोजगार

अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) की रिपोर्ट्स के अनुसार वर्ष 2022 में भारत की कुल बेरोजगार आबादी में 83 फीसदी बेरोजगार युवा थे। प्रख्यात अर्थशास्त्री ने कहा कि इसलिए बड़े निगमों ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है और जो अत्यधिक कुशल हैं, उन्होंने भी अच्छा प्रदर्शन किया है। लेकिन निचले स्तर पर, लोग बेरोजगार हैं और कंपनियां अपनी क्षमता का विस्तार करने के लिए संघर्ष कर रही हैं।

राजीव कुमार के अनुसार रोजगार पैदा करने के बारे में दो महत्वपूर्ण चीजों में से एक छोटे और मध्यम उद्यमों के लिए काम की स्थितियों को और आसान बनाना है। एसएमई को अभी भी बहुत सारे विनियामक और अनुपालन बोझ का सामना करना पड़ता है। इसलिए केंद्र सरकार को राज्य सरकारों के साथ मिलकर बेरोजगारी की समस्या को निपटना होगा।

सुजलॉन एनर्जी को बड़ा झटका! टॉप मैनेजमेंट से इस्तीफा, 5 फीसदी गिरा शेयर

सुजलॉन एनर्जी के स्वतंत्र निदेशक Marc Desaedeleer ने इस्तीफा देते हुए कंपनी पर गंभीर आरोप लगाए। उनका कहना है कि कई बार सुजलॉन एनर्जी के कोऑपरेटिव गवर्नेंस स्टैंडर्ड उनकी अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरे। मार्क ने कहा कि उन्हें कंपनी की ओर से संवाद में खुलेपन और पारदर्शिता की उम्मीद थी लेकिन वे निराश हुए। Marc Desaedeleer का कार्यकाल इसी साल सितंबर में खत्म होने वाला था।

नईदिल्ली। रिन्यूएबल सेक्टर की कंपनी सुजलॉन एनर्जी के शेयर (Suzlon Energy Share Price) सोमवार (10 जून) को शुरुआती कारोबार में 5 फीसदी तक लुढ़क गए। दरअसल, सुजलॉन में एक इंडिपेंडेंट डायरेक्टर Marc Desaedeleer ने शनिवार को इस्तीफा दिया था और कंपनी के शेयरों में गिरावट उसी की प्रतिक्रिया मानी जा रही है।

इंडिपेंडेंट डायरेक्टर ने क्यों इस्तीफा दिया?

Marc Desaedeleer ने इस्तीफा देते हुए कंपनी पर गंभीर आरोप लगाए। उनका कहना है कि कई बार सुजलॉन एनर्जी के कोऑपरेटिव गवर्नेंस स्टैंडर्ड उनकी अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरे। मार्क ने कहा कि उन्हें कंपनी की ओर से संवाद में खुलेपन और पारदर्शिता की उम्मीद थी, लेकिन वे निराश हुए। Marc Desaedeleer का कार्यकाल इसी साल सितंबर में खत्म होने वाला था।

सुजलॉन एनर्जी ने दी सफाई

हालांकि, सुजलॉन एनर्जी के सीईओ ने किसी भी तरह की गड़बड़ी के आरोपों से इनकार किया है। उन्होंने कहा कि जो भी आपत्तियां उठाई गई थीं, वे काफी सामान्य और प्रोसेस ओरिएंटेड हैं यानी उन पर काम चल रहा है और उन्हें सही समय आने पर लागू किया जाएगा।

मैनेजमेंट ने स्पष्ट किया कि सुजलॉन एनर्जी ने सभी कानूनी और वित्तीय नियमों का पालन किया है। उनका कहना है कि Desaedeleer का कोई भी सुझाव वित्तीय या परिचालन में किसी गड़बड़ी से जुड़ा नहीं था। Desaedeleer की कुछ व्यक्तिगत अपेक्षाएं थीं, जिन पर वे जल्द से जल्द अमल थे।

30 दिन में पैसे डबल करने वाले शेयर को नहीं मिल रहे खरीदार, दो दिन से लग रहा लोअर सर्किट

परिवहन विशेष न्यूज

रतनइंडिया पावर से निवेशकों का मोहभंग होता दिख रहा है और मुनफावसूली की कोशिश में है। यही वजह है कि पिछले दो कारोबारी सत्रों से रतनइंडिया पावर के शेयरों का कोई खरीदार नहीं मिल रहा और इसमें लोअर सर्किट लग रहा है। सोमवार (10 जून) को भी रतनइंडिया पावर के शेयर 5 फीसदी की गिरावट के साथ 17.10 रुपये पर बंद हुए।

नई दिल्ली। देश की सबसे बड़ी निजी बिजली उत्पादक कंपनियों में से रतनइंडिया पावर ने लोकसभा चुनाव होने के अगले तीस दिनों में निवेशकों को 100 फीसदी का रिटर्न देकर मालामाल कर दिया। 19 अप्रैल को लोकसभा चुनाव के पहले चरण की वोटिंग हुई, तब रतनइंडिया पावर का शेयर प्राइस 9.20 रुपये था, जो अगले 30 दिनों में 18 रुपये के पार पहुंच गया।

मुनाफावसूली कर रहे निवेशक!

लेकिन, अब रतनइंडिया पावर से निवेशकों का मोहभंग होता दिख रहा है और मुनफावसूली की कोशिश में है। यही वजह है कि पिछले दो कारोबारी सत्रों से रतनइंडिया पावर के शेयरों का कोई खरीदार नहीं मिल रहा और इसमें लोअर सर्किट लग रहा है। सोमवार (10 जून) को भी 5 फीसदी की गिरावट के साथ 17.10 रुपये पर बंद हुए।

रतनइंडिया पावर के स्टॉक में गिरावट का सिलसिला लोकसभा चुनाव के रिजल्ट वाले दिन यानी 4 जून को शुरू हुआ। उस दिन यह 21.10 रुपये पर पहुंच गया था, जो इसका एक साल सबसे उच्च स्तर रहा है। वहां से रतनइंडिया पावर में 10 फीसदी से अधिक का करेक्शन हो चुका है और यह अब 17 रुपये तक आ गया है।

पिछले 1 महीने में रतनइंडिया ने 52 फीसदी का रिटर्न दिया। वहीं, बीते 6 महीने में निवेशकों को कंपनी से करीब 80 का मुनाफा हुआ है।

क्या करती है रतनइंडिया पावर?

रतनइंडिया पावर लिमिटेड देश के पावर सेक्टर की सबसे बड़ी निजी कंपनियों में से एक है। इसकी नींव 2007 में राजीव रतन ने रखी थी। कंपनी मुख्य काम कोयले से चलने वाले थर्मल पावर प्रोजेक्ट्स को चलाना और उनका रखरखाव करना है। यह अमरावती और नासिक में स्थित अपने थर्मल पावर प्लांट से करीब 2,700 मेगावाट बिजली पैदा करती है। इनसे लाखों घर रोशन होते हैं।

बिना यूपीआई पिन एंटर किए कर सकते हैं डिजिटल पेमेंट, एक दिन में इतने रुपये का ही हो सकेगा ट्रांजैक्शन

एक टैप में पेमेंट करने के साथ यूपीआई पिन एंटर करने की भी जरूरत होती है। यही यूपीआई पिन जब छोटी-छोटी पेमेंट के लिए एंटर किया जाए तो किसी भी स्मार्टफोन यूजर के लिए ज्यादा समय लगने वाला काम हो सकता है। ठीक ऐसी ही स्थिति के लिए यूपीआई लाइट की सुविधा काम आती है। यूपीआई लाइट (UPI Lite) यूपीआई ऐप में एक ऑनलाइन वॉलेट है।

नईदिल्ली। डिजिटल पेमेंट के इस दौर में स्मार्टफोन का इस्तेमाल डिजिटल लेन-देन के लिए भी हो रहा है। फोन में मौजूद यूपीआई ऐप के जरिए एक टैप में पेमेंट की जा सकती है। हालांकि, एक टैप में पेमेंट करने के साथ यूपीआई पिन एंटर करने की भी जरूरत होती है। यही यूपीआई पिन जब छोटी-छोटी पिन के लिए एंटर किया जाए तो किसी भी स्मार्टफोन यूजर के लिए ज्यादा समय लगने वाला काम हो सकता है। ठीक ऐसी ही स्थिति के लिए यूपीआई लाइट की सुविधा काम आती है।

क्या है यूपीआई लाइट

यूपीआई लाइट यूपीआई ऐप में एक ऑनलाइन वॉलेट है। इस ऑनलाइन वॉलेट को भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (National Payments Corporation of India) ने पिन एंटर किए बिना पेमेंट करने की सुविधा के साथ पेश किया है।

यूपीआई लाइट का इस्तेमाल गूगल पे और भीम ऐप के साथ ही किया जा सकता है। बता दें, यह ऑनलाइन वॉलेट कम कीमत वाली पेमेंट के लिए ही लाया गया है।

UPI Lite की कितनी है लिमिट

अगर आप यूपीआई लाइट का इस्तेमाल करते हैं तो एक लिमिट (UPI Lite Transaction Limit) का भी ध्यान रखा जाना जरूरी होगा-

यूपीआई लाइट के साथ 500 रुपये पर ट्रांजैक्शन की लिमिट तय की गई है।

यूपीआई लाइट के साथ मल्टीपल पेमेंट के साथ एक दिन में 4000 रुपये तक ऐड कर सकते हैं।

यूपीआई लाइट के साथ एक बार में 2000 रुपये ही होल्ड कर सकते हैं।

UPI Lite कैसे करें इस्तेमाल

यूपीआई लाइट का इस्तेमाल गूगल के जीपे ऐप के साथ किया जा सकता है। ऐप इस्तेमाल करते हैं तो ऐप ओपन करने के साथ ही UPI Lite को होम पेज पर देख सकेंगे।

जैसे ही यूपीआई लाइट पर टैप करते हैं बैंक अकाउंट से वॉलेट में पैसे ऐड करने के ऑप्शन पर आ जाएंगे। अब यहां 100,500, 1000 या मैक्सिमम के ऑप्शन पर टैप कर सकते हैं। अब ऐड पर टैप करने के साथ यूपीआई पिन एंटर कर अमाउंट ऐड कर सकते हैं।

अगली बार जब भी किसी छोटी पेमेंट के लिए गूगल पे का इस्तेमाल करेंगे तो यूपीआई लाइट का ऑप्शन स्क्रीन पर नजर आ जाता है। टैप करने के साथ ही बिना पिन एंटर किए पेमेंट कर सकते हैं।

म्यूचुअल फंड इनफ्लो उच्चतम स्तर पर पहुंचा, मई में निवेश 34,000 करोड़ रुपये से ज्यादा का हुआ इन्वेस्टमेंट

परिवहन विशेष न्यूज

इक्विटी म्यूचुअल फंड में मई में निवेश जोरदार बढ़त के साथ 34697 करोड़ रुपये के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गया। यह आंकड़ा इससे पिछले महीने के मुकाबले 83 प्रतिशत अधिक है। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एम्फी) ने सोमवार को बताया कि यह इक्विटी फंड में शुद्ध निवेश का लगातार 39 वां महीना है।

नई दिल्ली। इक्विटी म्यूचुअल फंड में मई में निवेश जोरदार बढ़त के साथ 34,697 करोड़ रुपये के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गया। यह आंकड़ा इससे पिछले महीने के मुकाबले 83 प्रतिशत अधिक है।

एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एम्फी) ने सोमवार को बताया कि यह इक्विटी फंड में शुद्ध निवेश का लगातार 39 वां महीना है। इसके अलावा, व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) से मासिक योगदान बढ़कर मई में 20,904 करोड़ रुपये हो गया, जो अप्रैल में 20,371 करोड़ रुपये था। इन योजनाओं में मासिक निवेश लगातार दूसरे महीने 20,000 करोड़ से अधिक है।

म्यूचुअल फंड में कितना हुआ इनफ्लो

म्यूचुअल फंड उद्योग ने मई में कुल मिलाकर 1.1 लाख करोड़ रुपये का प्रवाह देखा, जो इससे पहले अप्रैल में 2.4 लाख करोड़ रुपये था। यह प्रवाह इक्विटी के साथ ही ऋण योजनाओं में निवेश के कारण हुआ। इस निवेश के साथ ही उद्योग की प्रबंधन के तहत शुद्ध संपत्तियां (एयूएम) बढ़कर मई के अंत में 58.91 लाख करोड़ रुपये हो गईं, जो अप्रैल के अंत में 57.26 लाख करोड़ रुपये थीं।

आंकड़ों के अनुसार, इक्विटी से जुड़ी योजनाओं में मई में 34,697 करोड़ रुपये का निवेश आया, जो अप्रैल के 18,917 करोड़ रुपये के आंकड़े से काफी अधिक है।

मॉर्निंगस्टार इन्वेस्टमेंट रिसर्च इंडिया के एसोसिएट डायरेक्टर - मैनेजर रिसर्च, हिमांशु श्रीवास्तव ने कहा।

रुक-रुक कर होने वाले सुधारों ने निवेशकों को ऐसे बाजार में खरीदारी के कुछ अवसर प्रदान किए, जहां लंबे समय से काफी तेजी देखी जा रही है। इसके अलावा, एनडीए के नेतृत्व वाली सरकार के दोबारा सत्ता में आने की उम्मीद ने भी

निवेशकों की ओर से खरीदारी को प्रेरित किया, क्योंकि उन्हें उम्मीद थी कि अगर एनडीए सरकार बनी तो बाजार में और तेजी आएगी।

चुनावी जीत के बाद चंद्रबाबू नायडू के परिवार को हुआ अरबों का फायदा, 12 दिन में ही हो गए पैसे डबल

इस साल भी आंध्र प्रदेश के चंद्रबाबू नायडू ने लोकसभा चुनाव में जीत हासिल की। Chandrababu Naidu के जीत हासिल करने के बाद उनसे जुड़ी कंपनियों के शेयर में शानदार तेजी देखने को मिली। शेयर में आई तेजी से चंद्रबाबू नायडू की पत्नी और बेटे को 1200 करोड़ रुपये का लाभ हुआ है। आइए इस रिपोर्ट में विस्तार से जानते हैं।

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के नतीजों (Lok Sabha Election Result 2024) का एलान हो गया है। नतीजों के बाद अब देश में नए सरकार का भी गठन हो गया है। इस साल भी आंध्र प्रदेश के चंद्रबाबू नायडू (Chandrababu Naidu) ने लोकसभा चुनाव में जीत हासिल की। चंद्रबाबू नायडू के जीत हासिल करने के बाद उनसे जुड़ी कंपनियों के शेयर में शानदार तेजी देखने को मिली।

चुनावी नतीजों के एलान के बाद से भी Heritage Foods के स्टॉक में 10 से 20 फीसदी की तेजी आई। आज सुबह शुरुआती कारोबार के दौरान ही कंपनी के शेयर ने 10 फीसदी के अपर सर्किट को टच किया। अब Heritage Foods के शेयर की कीमत 727.9 रुपये प्रति शेयर हो गई है।

Heritage Foods के शेयर की परफॉर्मेंस

29 मई 2024 से अब तक कंपनी के शेयर में 95 फीसदी से ज्यादा की तेजी आई है। 29 मई को एग्जिट पोल के आने के बाद से कंपनी के शेयर बढ़त के साथ कारोबार करने लगे थे। आपको बता दें कि आंध्र प्रदेश में तेलुगू देशम पार्टी (TDP) ने 175 में से ज्यादातर सीटें जीती हैं।

अगर Heritage Foods के शेयर की परफॉर्मेंस की बात करें तो कंपनी के शेयर ने पिछले 5 ट्रेडिंग सेशन में 63.51 फीसदी का रिटर्न दिया है। वहीं, 1 साल में कंपनी ने निवेशकों को 232.55 फीसदी का रिटर्न दिया।

चंद्रबाबू नायडू के परिवार को हुआ फायदा

लोकसभा चुनाव में जीत के साथ ही शेयर में आई तेजी से चंद्रबाबू नायडू के परिवार को डबल फायदा हुआ है। आपको बता दें कि Heritage Foods कंपनी में चंद्रबाबू नायडू की पत्नी भुवनेश्वरी नारा के पास 24.37 फीसदी और बेटे नारा लोकेश के पास 10.82 फीसदी की हिस्सेदारी है।

पिछले महीने 23 मई तक इनके निवेश की कुल वैल्यू 1,100 करोड़ रुपये थी, जो अब 2,300 करोड़ रुपये के पार पहुंच चुकी है। इसका मतलब है कि चंद्रबाबू नायडू के परिवार को 1,200 करोड़ रुपये का फायदा हुआ है।

मोदी सरकार में मंत्रालयों का बंटवारा, मनोहर लाल खट्टर को 2, अश्विन वैष्णव रेल व सूचना प्रसारण मंत्री

परिवहन विशेष न्यूज

एसडी सेठी। तीसरी बारी की एनडीए सरकार की कैबिनेट में चर्चा के दौरान मंत्री बनने वाले सांसदों की आधिकारिक लिस्ट अभी जारी नहीं हुई है। अनुमान है कि मंत्रालय बंटवारे की सूची रात 10 बजे तक सामने आ सकती है।

फिलहाल नितिन गडगरी को एकबार फिर सडक परिवहन मंत्रालय का पदभार दिया गया है। गडगरी को दो राज्य मंत्री मिले है। इनमें दिल्ली से सांसद हर्ष मल्होत्रा और अजय टाटा को सडक परिवहन राज्य मंत्री बनाया गया है। इसक अलावा एस जय शंकर को विदेश मंत्रालय मिला है। अश्विन वैष्णव को फिर रेल मंत्रालय का प्रभारी बनाया गया है।हरियाणा के पूर्व सीएम व करनाल से सांसद मनोहर लाल खट्टर को दो मंत्रालय दिए गए है।शहरी विकास मंत्रालय, और ऊर्जा मंत्रालय का कार्यभार सौपा गया है। इनके साथ श्रीपद नाईक को राज्य मंत्री बनाया गया है। निर्मला सीतारमन को एक बार फिर वित मंत्री बनाया गया है। अमित शाह को एक बार फिर गृह मंत्रालय गया सौंपा है। शिवराज सिंह चौहान को कृषि और ग्रामीण विकास मंत्रालय का पद भार सौंपा गया है। वहीं जीतन राम मांझी को लघु उधोग मंत्रालय का कार्यभार सौंपा है।इनके साथ राज्य मंत्री शोभा को बनाया गया है। रक्षा मंत्री फिर राजनाथ सिंह बने है।अश्विन वैष्णव को सूचना प्रसारण और रेल मंत्रालय का भी पद भार सौंपा है। चिराग पासवान को खेल मंत्रालय की जिम्मेदारी दी गई है।कुमार स्वामी को हैवी स्टील मंत्रालय दिया गया है।सी आर पाटिल जल शक्ति मंत्री बनाए गए है। राधा मोहन नायडू को नागरिक उड्डयन मंत्री बनाया गया है।अन्नपूर्णा को बाल विकास मंत्रालय सौपा है।गजेंद्र शेखावत को टूरिज्म मिनिस्टरी, पीयूष गोयल को कॉमर्स एवं इंडस्ट्रीज मंत्रालय दिया है। हरदीप सिंह पुरी पेट्रोलियम एव गैस मंत्रालय का कार्यभार मिला है। जेपी नड्डा को स्वास्थ्य मंत्री बनाया गया है। प्रह्लाद जोशी को खाध मंत्री दिया है। सरदार बिट्टू को अल्पसंख्यक मंत्रालय सौंपा है।, किरण रिजूजी को संसदीय कार्य मंत्री दिया गया है।जे पी नड्डा को स्वास्थ्य एवं पेट्रोलियम मंत्रालय दिया गया है।गिरिराज सिंह को कपडा मंत्रालय दिया गया है।अभी और भी मंत्रालयों की सूचना आना बाकी है।

नरेंद्र मोदी आरएसएस का अदना सा प्रचारक, जिसने नेहरू की बराबरी कर प्रधानमंत्री की हैट्रिक लगाई

परिवहन विशेष। एसडी सेठी। भारत के प्रधानमंत्री के इतिहास में 9 जून 2024 को नया अध्याय जुड गया गया है। देश की राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के राष्ट्रपति भवन में नरेंद्र दामोदरदास मोदी ने लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। भारत की राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने पीएम को शपथ दिलाई। पीएम मोदी के साथ ही 71 सांसदो ने केंद्र के मंत्री पद की शपथ ली। संघर्ष से शिखर तक का सफर तय करने वाले नरेंद्र दामोदरदास मोदी 17 सितंबर, 1950 को वडनगर, गुजरात में जन्में मोदी पिता दामोदर दास मूलचंद मोदी और माता हीराबेन के खासे करीब रहे हैं। लेकिन राजनीतिक जीवन में आने के बाद वे अपने परिवार से दूर हो गए। अपनी किशोर अवस्था में ही उन्होने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ(आर एस एस) से जुडकर स्वयंसेवक के रूप में काम करना शुरू किया।इस दौरान उन्होने अनुशासन, संगठन और देशभक्ति के गुण सीखे।1980 के दशक में नरेंद्र मोदी भारतीय जनता पार्टी के गठन के साथ ही BJP में शामिल हो हुए। उन्होने पार्टी के संगठनात्मक कामों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मोदी ने गुजरात के विभिन्न क्षेत्रों में पार्टी को मजबूत किया।2001 में गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री केशुभाई पटेल ने इस्तीफा दिया ।तब 2001 में नरेंद्र मोदी को गुजरात के मुख्यमंत्री पद पर नियुक्त किया गया। उन्होने फरवरी 2002 में गुजरात विधानसभा भंग की। और 12दिसंबर ,2002 में चुनाव हुए ।परिणाम 15 दिसंबर,2002 को घोषित हुए। बीजेपी ने 182 मे से 127 सीटे जीती।

तीसरी बार:- 2007-2012 में बीजेपी ने 182 मे से 117 सीटें जीती।

चौथी बार:-2012-2014 के चुनाव में फिर बाजी मारी।बीजेपी ने 182 में से 115 सीटें जीती। 2014 लोकसभा चुनाव :- नरेंद्र मोदी को सितंबर 2013 में बीजेपी की ओर से प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया गया।नरेंद्र मोदी ने 22 मई,2014 को गुजरात के सीएम पद से इस्तीफा दिया और 26 मई, 2014 को भारत के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली।

2019 लोकसभा चुनाव:- नरेंद्र मोदी लगातार दूसरी बार 30 मई,2019 को प्रधानमंत्री पद की शपथ ली।

मोदी के द्वारा अब तक लिए फैसले:-

जन धन योजना:- गरीबों के लिए बैंक खाते खोलने की योजना, स्वच्छ भारत अभियान, जी एसटी, नोटबंदी, उज्ज्वला भारत, आयुष्मान भारत, कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाना, तीन तलाक पर प्रतिबंध कोविड-2019 महामारी के दौरान लॉकडाऊन और वैक्सीनेशन अभियान का नेतृत्व, कृषि कानून जो बाद में वापस लेना पडा। लोकसभा चुनाव:- 2024-2027 के चुनाव के दौरान घोषित परिणाम में बीजेपी ने अपने नेतृत्व में एनडीए के तहत चुनाव लडा और बीजेपी ने 240 सीटें जीती । एनडीए +बीजेपी =294 सीटें एनडीए को मोदी के नाम पर लडे गए चुनाव में एनडीए को पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ। रविवार 10 जून,2024 को नरेंद्र मोदी ने तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेकर जवाहर लाल नेहरू के बराबर का इतिहास दर्ज कर लिया।

सांसद एसपी सिंह बघेलजी के उत्कृष्ट नेतृत्व में आगरा की विकास यात्रा को नई गति एवं नई शक्ति मिलेगी : वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना

परिवहन विशेष न्यूज

आगरा। उत्तर प्रदेश की आगरा लोकसभा सुरक्षित सीट पर एसपी सिंह बघेल ने दूसरी बार जीत दर्ज की है। बघेल गठबंधन पर भारी पड़े थे। भाजपा ने उन पर फिर से विश्वास जताते हुए उन्हें मोदी कैबिनेट में जगह मिली हैं। उन्हें राज्यमंत्री का प्रभार मिला है। रविवार को एसपी सिंह बघेल ने राज्यमंत्री पद की शपथ ली हैं। उसके बाद तमाम नेताओं ने उन्हें बधाई दी, साथ ही आगरा के उद्योगपति एवं वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने भी उन्हें नए कार्यकाल के लिए हार्दिक शुभकामनाएं दीं। इस ऐतिहासिक अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने कहा कि आगरा के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता, सशक्त, सक्षम आदरणीय सांसद एसपी सिंह बघेलजी को लगातार दूसरी मोदी कैबिनेट में मंत्री के रूप में शपथ लेने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल कार्यकाल हेतु अनंत शुभकामनाएं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि माननीय सांसद एसपी सिंह बघेल जी का दुसरा कार्यकाल विकसित आगरा के निर्माण की दिशा में मजबूती से आगे बढ़ने वाला स्वर्णिम काल होगा। निश्चित रूप से बघेल जी के सशक्त नेतृत्व में आगरा बड़ी आर्थिक शक्ति बन कर उभरेगा और आगरा वासियों की आशाओं व आकांक्षाओं को पूर्ण करने में सहायक सिद्ध होगा। श्री बघेलजी के नेतृत्व में आगरा ने परिवर्तनकारी परिवर्तन देखे हैं, और उनके लगातार दूसरे कार्यकाल में आर्थिक विकास और सामाजिक कल्याण में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। हम आगरा की एकता को मजबूत करने, सतत विकास को आगे बढ़ाने और सभी नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासों को देखने के लिए तत्पर हैं। आगरा के मतदाताओं को अपने महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक अधिकार का प्रयोग करने के लिए बधाई।

श्री खुराना ने आगे कहा कि भारतीय लोकतंत्र के लिए आज का दिन ऐतिहासिक है। हमें आशा है कि आपका नया कार्यकाल आगरा के विकास और समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण साबित होगा। सांसद एसपी सिंह बघेलजी की अविराम साधना का ही प्रतिफल है कि पिछले 10 वर्षों में आगरा का नव उत्थान हुआ है। गरीब, महिला, युवाओं के साथ ही आगरा के वंचित वर्ग का जीवन आसान हुआ है। विरासत, विकास व विश्वास को संजोए यह अविस्मरणीय एवं ऐतिहासिक उपलब्धि आगरा और एनडीए परिवार को गौरवभूषित तथा हर्षित करने वाली है। आगरावासियों की सुख, शांति और समृद्धि के लिए साधनारत बघेल जी का यह कार्यकाल निःसंदेह आत्मनिर्भर भारत-विकसित भारत की संकल्पना को साकार करते हुए आगरा के विकास में स्थापित करने वाला सिद्ध होगा। आपके निरंतर नेतृत्व में भारत विकास और समृद्धि के पथ पर अग्रसर रहेगा और आपके कुशल नेतृत्व में हमारा आगरा विकास की नई ऊंचाइयों पर पहुंचेगा तथा आगरा के विकास में भी पूरा सहयोग मिलेगा। आपके उत्कृष्ट नेतृत्व में आगरा की विकास यात्रा को नई गति एवं नई शक्ति मिलेगी। दीर्घकालिक कार्यकाल के लिए आदरणीय सांसद जी को अनेकों मंगलकामनाएं।

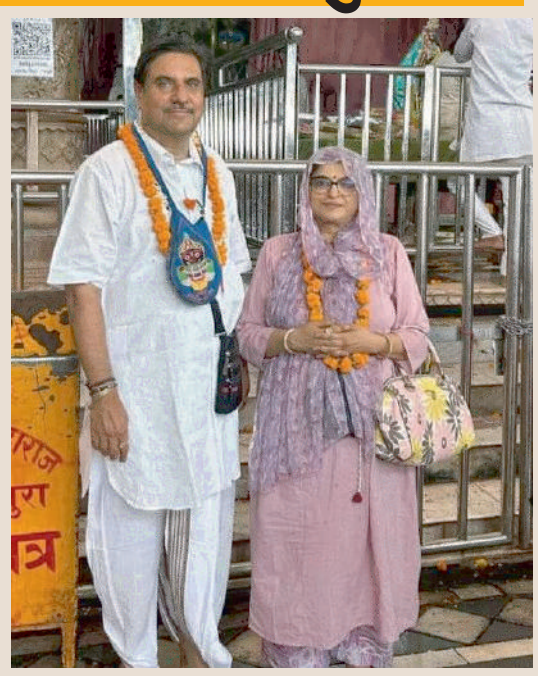

मोदीजी के कुशल नेतृत्व में देश विकास की नई ऊंचाइयों पर पहुंचेगा तथा यूपी के विकास में भी पूरा सहयोग मिलेगा : समाजसेवी पंकज जैन

परिवहन विशेष न्यूज

मोदीजी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने एवं एसपी बघेल जी को केंद्रीय राज्य मंत्री बनने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं : समाजसेवी पंकज जैन

आगरा। रविवार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तीसरी बार प्रधानमंत्री पद और सांसद एसपी सिंह बघेल ने मंत्री पद की दूसरी शपथ ली। उसके बाद तमाम नेताओं ने उन्हें बधाई दी। साथ ही हिन्दू जागरण मंच ब्रज प्रान्त आगरा के सह संयोजक एवं समाजसेवी पंकज जैन ने नरेंद्र मोदीजी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने एवं एसपी बघेलजी को केंद्रीय राज्य मंत्री बनने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल कार्यकाल हेतु अनंत शुभकामनाएं दी।

इस ऐतिहासिक अवसर पर समाजसेवी पंकज जैन ने कहा कि विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता, सशक्त, सक्षम व शक्तिशाली भारत के शिल्पकार, राष्ट्र ऋषि यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी को तीसरी बार प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेने एवं एसपी बघेलजी को केंद्रीय राज्य मंत्री बनने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल कार्यकाल हेतु अनंत शुभकामनाएं। उन्होंने कहा कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में इतिहास का सबसे बड़े चुनाव होना और बिना किसी बाधा के नए सरकार का गठन होना गर्व की बात है। भारतीय मतदाताओं को अपने महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक अधिकार का प्रयोग करने के लिए बधाई। हमें आशा है कि नया कार्यकाल भारत के विकास और समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण साबित होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि माननीय प्रधानमंत्री जी का तीसरा कार्यकाल विकसित भारत के निर्माण की दिशा में मजबूती से आगे बढ़ने वाला स्वर्णिम काल होगा। निश्चित रूप से मोदी जी के सशक्त नेतृत्व में देश विश्व की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बन कर उभरेगा और देशवासियों की आशाओं व आकांक्षाओं को पूर्ण करने में सहायक सिद्ध होगा।

उन्होंने कहा कि भारतीय लोकतंत्र के लिए आज का दिन ऐतिहासिक है। आपके नेतृत्व में विकसित भारत का संकल्प पूर्ण होते दुनिया देखेगी। आपकी अविराम साधना का ही प्रतिफल है कि पिछले 10 वर्षों में राष्ट्र का 'नव उत्थान' हुआ है। गरीब, महिला, युवाओं के साथ ही देश के वंचित वर्ग का जीवन आसान हुआ है। विरासत, विकास व विश्वास को संजोए यह अविस्मरणीय एवं ऐतिहासिक उपलब्धि देश और एनडीए परिवार को गौरवभूषित तथा हर्षित करने वाली है। 140 करोड़ भारतवासियों की सुख, शांति और समृद्धि के लिए साधनारत प्रधानमंत्री जी का यह कार्यकाल निःसंदेह आत्मनिर्भर भारत-विकसित भारत की संकल्पना को साकार करते हुए भारत को विश्व में महाशक्ति के रूप में स्थापित करने वाला सिद्ध होगा। माननीय प्रधानमंत्री जी के कुशल नेतृत्व में देश विकास की नई ऊंचाइयों पर पहुंचेगा तथा यूपी के विकास में भी पूरा सहयोग मिलेगा।

श्री जैन साहब ने आगे कहा कि 140 करोड़ भारतीयों की आशाओं, आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु प्रतिबद्ध आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने पर हार्दिक बधाई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और टीम मोदी 3.0 के सभी मंत्रियों को बधाई। वह ऐतिहासिक क्षण जिसका पूरे देश को इंतजार था। उनके नेतृत्व में राष्ट्र ने परिवर्तनकारी परिवर्तन देखे हैं, और उनके लगातार कार्यकाल में आर्थिक विकास और सामाजिक कल्याण में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। हम राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने, सतत विकास को आगे बढ़ाने और सभी नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासों को देखने के लिए तत्पर हैं। विकास का नया अध्याय लिखने को भारत तैयार हैं। आपके उत्कृष्ट नेतृत्व में भारत की विकास यात्रा को नई गति एवं 2047 तक नए भारत बनाने के संकल्प को नई शक्ति मिलेगी। दीर्घकालिक कार्यकाल के लिए प्रधान सेवक मोदीजी को अनेकों मंगलकामनाएं।

पुराना शहर द्वारा माहेश्वरी नेम प्लेट का अनावरण किया

अनूप कुमार शर्मा

घर-घर जाकर वितरित करेंगे पदाधिकारी

भीलवाड़ा। एक नई पहल करते हुए महेश नवमी के अवसर पर पुराना शहर क्षेत्रीय माहेश्वरी सभा भीलवाड़ा ने आज सोमवार को माहेश्वरी समाज संपत्ति ट्रस्ट के बड़े मंदिर की बगीची में माहेश्वरी नेम प्लेट का विधिवत अनावरण किया माहेश्वरी नेम प्लेट के अनावरण से पूर्व भगवान महेश के चित्र पर माल्यार्पण कर द्वीप प्रज्वलन कर पूजा अर्चना की गई पुराना शहर क्षेत्रीय सभा के अध्यक्ष कैलाश बाहेती के नेतृत्व में क्षेत्रीय सभा में निवासरत लगभग 425 परिवारों को घर-घर जाकर परिवार के मुखिया के नाम से बनवाई गई नेम प्लेट वितरित की जाएगी घर के बाहर लगाए जाने वाली इस नेम प्लेट के माध्यम से हर किसी को यह ज्ञात हो सकेगा कि यह माहेश्वरी समाज के परिवार का घर है माहेश्वरी नेम प्लेट का अनावरण नगर माहेश्वरी सभा संरक्षक केदारमल जागेटीया, अध्यक्ष केदार गगरानी ,सचिव संजय जागेटिया, उपाध्यक्ष महावीर समदानी ,संगठन मंत्री प्रमोद डाड, श्री महेश सेवा समिति के अध्यक्ष ओम नाराणीवाल, सचिव राजेंद्र कचोलिया ,उपाध्यक्ष कृष्ण गोपाल जागेटिया, जिला माहेश्वरी सभा के जिला मंत्री रमेश राठी, दक्षिण राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के उपाध्यक्ष सत्येंद्र तोतला ,महेश नवमी महोत्सव के संयोजक राधेश्याम सोमानी, बड़ा मंदिर ट्रस्ट मंत्री छीतर मल डाड, अशोक काबरा ,श्याम डाड, क्षेत्रीय माहेश्वरी सभा अध्यक्ष कैलाश बाहेती,मंत्री सत्यनारायण तोतला, नगर युवा संगठन के अध्यक्ष अर्चित मुन्दडा, पुराना शहर क्षेत्रीय माहेश्वरी युवा संगठन के अध्यक्ष शिव रतन तोषनीवाल सहित समाज के अनेक पदाधिकारी ने किया

नगर सभा उपाध्यक्ष महावीर समदानी ने बताया कि इस अवसर पर नगर अध्यक्ष केदार गगरानी व संरक्षक केदार जागेटिया अपने उद्बोधन में पुराना शहर क्षेत्रीय माहेश्वरी सभा की इस नई पहल की भूरी भूरी प्रशंसा की, कार्यक्रम के शुभारंभ में पुराना शहर क्षेत्रीय माहेश्वरी सभा के ऊर्जावान अध्यक्ष कैलाश बाहेती ने अपने श्रीमुख से सभी अतिथियों का भाव भीना स्वागत किया कार्यक्रम के अंत में क्षेत्रीय सभा के मंत्री सत्यनारायण तोतला ने सभी का आभार ज्ञापित किया कार्यक्रम का संचालन रमेश राठी ने किया।

मुख्यमंत्री कोन बनेगा : धर्मेंद्र आउट, सुरेश पुजारी इन!

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड उडीशा

भुबनेस्वर : ओडिशा के अगले मुख्यमंत्री की लिस्ट में संबलपुर से सांसद और केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का नाम सबसे आगे था । मोदी के तीसरे कार्यकाल की नई कैबिनेट में कैबिनेट मंत्री के रूप में धर्मेंद्र प्रधान के शपथ लेने के बाद इस चर्चा पर विराम लग गया है । धर्मेंद्र के मुख्यमंत्री की दौड़ से बाहर होने के बाद इस बात की काफी चर्चा हो रही है कि मुख्यमंत्री कौन होगा ।बीजेपी के एक वरिष्ठ नेता के मुताबिक, ओडिशा का मुख्यमंत्री कौन होगा, इस पर अभी तक कोई औपचारिक चर्चा नहीं हुई है ।2014 से ओडिशा में बीजेपी संगठन को मजबूत करने वाले धर्मेंद्र प्रधान के इस बार सांसद चुने जाने के बाद से केंद्रीय नेतृत्व उन्हें केंद्र में गुरु की जिम्मेदारी देना चाहता है, श्री प्रधान ने कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ ली है. चूंकि धर्मेंद्र ने केंद्रीय मंत्री पद की शपथ ले ली है, इसलिए उनके मुख्यमंत्री बनने की कोई संभावना नहीं है । इसी तरह, ब्रजराजनगर से विधायक के रूप में जीत हासिल करने वाले सुरेश पुजारी अब एकमात्र विधायक के रूप में दिल्ली में हैं, जिन्हें केंद्रीय नेतृत्व का बुलावा आया है, इसलिए उनके अगले मुख्यमंत्री बनने की भी काफी चर्चा है । सुरेश पश्चिम ओडिशा के एक प्रमुख नेता हैं। वह 2019 के चुनाव में बारगढ़ संसदीय क्षेत्र से चुने गए। चुनावी राजनीति में अपनी सफलता से पहले, श्री पुजारी ने भाजपा केंद्रीय समिति में राज्य भाजपा अध्यक्ष और संपादक के रूप में कार्य किया। तब तक सुरेश का नाम फाइनल नहीं हुआ था । मुख्यमंत्री की रेस में अभी भी पार्टी के कुछ और विधायकों के नाम पर चर्चा चल रही है ।

बीजेपी ने कहा है कि पार्टी के केंद्रीय निरीक्षक सोमवार या मंगलवार को ओडिशा का दौरा करेंगे ।वे विधायक दल की बैठक में शामिल होंगे और संभावित उम्मीदवारों पर चर्चा करेंगे । इसके बाद सर्वसम्मति से पार्टी का एक नेता चुना जाएगा।

गौभक्त विकास कुमार शर्मा के निवास स्थान पर सम्मान समारोह कार्यक्रम

हैदराबाद। नागाराम में स्थित राजस्थानी समाज गौभक्त विकास कुमार शर्मा निवास स्थान पर प्रवासी समाज बन्धुओं के सानिध्य में राजस्थान सरकार में राजस्व मंत्री एवं सैनिक कल्याण मंत्री विजय सिंह चौधरी नावा विधायक नागौर से हैदराबाद आगमन पर राजस्थानी समाज द्वारा भव्य स्वागत किया ।गौभक्त विकास कुमार शर्मा , भारतीय जनता पार्टी नेता सोहन सिंह राजपुरोहित, भारतीय जनता पार्टी नेता धर्माराम ढांका, कैलाश शर्मा , श्री आईजी गौशाला अध्यक्ष मंगलाराम पंवार सहसचिव ढगलाराम सेपटा, दामोदर शर्मा, किशोर शर्मा ,जय प्रकाश शर्मा, सुनिल कुमार शर्मा, आनंद कुमार शर्मा, गोपाल चौधरी, महावीर प्रसाद शर्मा, कपिल कुमार शर्मा लक्ष्मण सिंह राजपुरोहित , सुरेन्द्र सैनी, राकेश कुमार सैनी, सभी राजस्थानी समाज बन्धु, गौभक्त से विकास कुमार शर्मा एवं भारतीय जनता पार्टी नेता सोहन सिंह राजपुरोहित, धर्माराम ढांका ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

लोकसभा की जंग में महिलाओं का दबदबा रहा कम

एसडी सेठी। इस बार के लोकसभा चुनाव में महिला सांसद 2019 के मुकाबले 2024 में अपना दबदबा कायम नहीं रख पाई। लोकसभा-2014 के चुनाव परिणामों पर गौर करें तो भारतीय जनता पार्टी की 30 महिला कंडीडेट ने चुनाव जीता ।जबकि कांग्रेस की 14 ,तृणमूल कांग्रेस की 11, समाजवादी पार्टी की 4, जनता दल युनाइटेड जेडीयू और लोक जनशक्ति पार्टी एलजेपी की महज 2-2 महिला उम्मीदवार ही जीत पाई हैं। इस बार के चुनाव में कुल 73 महिलाए चुनी गई है ।जबकि 2019 के आम चुनाव में यह संख्या 78 थी। कुल 797 महिला उम्मीदवारों ने चुनाव लडा था। जिसमें सबसे अधिक भाजपा से 69 और कांग्रेस ने 41 महिलाओ को चुनावी जमीं पर उतारा था। बता दें कि संसद में महिला आरक्षण विधेयक पास होने के बाद यह पहला चुनाव है ।इस कानून के तहत लोकसभा और राज्य विधानसभाओ में महिलाओ के लिए एक तिहाई सीटें आरक्षित करने का प्रावधान है। उल्लेखनीय है कि 17 लोकसभा में महिलाओ की संख्या सबसे अधिक 78 थी ।जो कुल संख्या का 14 फीसदी थी। वहीं 16 वीं लोकसभा में 64 महिलाए सांसद थी ।जबकि 15 वीं लोकसभा में यह संख्या 52 थी। बता दें कि लोकसभा की सीटों को बरकरार रखने वाली महिलाओ में भाजपा की हेमा मालिनी, तृणमूल की महुआ मोईतरा राकांपा की सुप्रिया सूले, और समाजवादी पार्टी से डिंपल यादव, ने अपनी सीटें बरकरार रखी है ।जबकि कंगना रणौत, और मीसा भारती जैसी उम्मीदवारों ने अपनी जीत से सबका ध्यान अपनी ओर खींचा है। अब सबसे कम उम्र की सांसद में समाजवादी की 25 वर्षीय प्रिया सरोज, और किराना से 29 वर्षीय इकरा चौधरी जीत हांसिल करने वाली सबसे कम आयु की उम्मीदवारों में शामिल है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023